हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार, 27 जुलाई 2025

11 पोस्टर बनाकर दी शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि

12 बढ़ता प्रदूषण कर रहा लोगों को बीमार

खबर संक्षेप

वाटरपोलो के लिए प्रदेश की टीम का चयन कल

बहादुरगढ़। शहर के एचएल सिटी में स्थित चैंपियंस एक्वेटिक एकेडमी के स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में सीनियर नेशनल वाटरपोलो के लिए हरियाणा की टीम का चयन सोमवार 28 जुलाई को किया जाएगा। हरियाणा तैराकी संघ के महासचिव अनिल खत्री ने बताया कि सीनियर नेशनल वाटरपोलो प्रतियोगिता इस बार 13 से 17 अगस्त तक गुजरात के अहमदाबाद में होगी। हरियाणा की मैन और वूमेंस टीमों के लिए 14-14 खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा।

धर्मेंद्र हत्या मामले में दो अन्य आरोपी गिरफ्तार

झज्जर। पुलिस की एक टीम द्वारा पत्रकार धर्मेंद्र निवासी लुहारी की हत्या मामले में कार्रवाई करते हुए दो अन्य आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। थाना प्रभारी माछरौली प्रवीन ने बताया कि बीते दो माह पहले लुहारी में एक पत्रकार की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। मृतक के पुत्र की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया था। मामले में कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों मुकेश और सुरेश निवासी लुहारी को गिरफ्तार किया गया है। आरोपियों के खिलाफ नियमानुसार कार्यवाई करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से आरोपी सुरेश को अदालत के आदेशानुसार न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। जबकि दूसरे आरोपी मुकेश को पूछताछ के लिए दो दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

साइबर ठगी मामले में एक आरोपी गिरफ्तार

झज्जर। पुलिस की एक टीम द्वारा साइबर ठगी मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। साइबर थाना प्रभारी सोमबीर ने बताया कि बादली निवासी एक व्यक्ति की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया था। मामले में कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान अशोक निवासी पल्ली राजस्थान के तौर पर की गई है। प्राथमिक जांच में सामने आया कि आरोपी ने अपने ऑनलाइन खाते की पूरी जानकारी, खाते में दर्ज मोबाइल फोन की नंबर सिम और अपना आधार कार्ड अपने सहआरोपी को देना पाया गया है। आरोपी के खिलाफ नियमानुसार कार्यवाई करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से आरोपी को अदालत के आदेशानुसार न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

ट्रक का टिपर चोरी करने के आरोपी काबू

बहादुरगढ़। थाना बादली की पुलिस टीम ने ट्रक का टिपर चोरी करने के मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। खेड़का गुर्जर निवासी मालिक राम ने शिकायत दी थी कि उसके स्टॉक पर ऑफिस के सामने टिपर (ट्रक का पिछला हिस्सा) खड़ा था। वह 16 जनवरी की रात चोरी हो गया और सीसीटीवी में 4 चोर नजर आए। पुलिस ने इस केस में पलवल निवासी इमरान और आवेश के साथ मेवात निवासी ताहिर को काबू किया। आरोपियों से वारदात में प्रयोग की गई गाड़ी, दो रबर टायर, तीन रिंग लोहा, 12 कमानी के पट्टे, प्रेशर पाइप और 45 हजार रुपए की नगदी बरामद बरामद की गई है। तीनों आरोपियों को अदालत में पेश करने के बाद न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया।

सीईटी : परीक्षा के दौरान चाक चौबंद रही व्यवस्था, बसों ने युवाओं को परीक्षा केंद्रों तक पहुंचाया

दोनों सत्रों में 6924 ने दी परीक्षा, 464 रहे अनुपस्थित

- पहले सत्र में 3 461 व दूसरे सत्र में 3694 ने दी परीक्षा
- पहले सत्र में 233 व दूसरे में 231 परीक्षार्थी रहे अनुपस्थित

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित सीईटी परीक्षा पहले दिन शांतिपूर्व ढंग से संपन्न हो गई। परीक्षा के दोनों सत्रों में जिले के 14 परीक्षा केंद्रों पर 6 हजार 924 अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी। जिला प्रशासन की ओर से परीक्षा को शांतिपूर्ण, सुव्यवस्थित बनाने के लिए पुख्ता प्रबंध किए गए। रोडवेज की मुफ्त बस सेवा से पहले शिफ्ट में छह हजार व दोनों शिफ्टों में कुल 14 हजार से अधिक परीक्षार्थी दूसरे जिलों में परीक्षा देने पहुंचे। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल व डीसीपी लोगेश कुमार पी प्रशासनिक अधिकारियों के साथ फील्ड में मौजूद रहे और परीक्षा केंद्रों पर व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

दिव्यांग के लिए रहे विशेष प्रबंध

दिव्यांग अभ्यर्थियों को घर से परीक्षा केंद्र तक पहुंचाने और वापिस लाने के लिए विशेष वाहन व स्वयंसेवक नियुक्त किए गए। यह सेवा पूरी तरह निःशुल्क और मानवीय आधार पर दी गई, जिससे इन विशेष परीक्षार्थियों को किसी प्रकार की असुविधा ना हो। उन्होंने सरकार के इस कदम की सराहना की और कहा कि प्रदेश में यह एक नई शुरुआत है।

डीसी ने लिया जायजा

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने स्वयं परीक्षा केंद्रों और शटल सेवा के संचालन का निरीक्षण किया। उन्होंने बस स्टैंड, हेल्प डेस्क और कंट्रोल रूम का दौरा कर व्यवस्थाओं की समीक्षा की तथा परीक्षार्थियों से बातचीत कर उनकी प्रतिक्रिया भी ली। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि किसी भी विद्यार्थी को कोई असुविधा नहीं होनी चाहिए।

दोनों सत्रों के अनुसार उपस्थिति

पहले सत्र में 3 हजार 461 व दूसरी शिफ्ट में 3 हजार 694 परीक्षार्थियों ने 14 केंद्रों पर परीक्षा दी। पहले सत्र में 233 व दूसरे सत्र में 231 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। दोनों सत्रों में कुल 6 हजार 924 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी।

गहन जांच के बाद मिला प्रवेश

सभी 14 परीक्षा केंद्रों पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम रहे। परीक्षार्थियों को गहन जांच के बाद ही अंदर प्रवेश करने दिया गया। जिसके कारण परीक्षा केंद्रों के बाहर परीक्षार्थियों की लंबी लंबी कतारें लगी रही। उधर, पुलिस द्वारा केंद्रों के बाहर नाके भी लगाए गए और पुलिस कर्मी निरंतर गश्त पर भी रहे।

झज्जर। शहर के शहीद रमेश कुमार मॉडल संस्कृति स्कूल में बने परीक्षा केंद्र पर कतारबद्ध खड़े परीक्षार्थी।

झज्जर। परीक्षा केंद्र में प्रवेश मिलने का इंतजार करते हुए परीक्षार्थी।

परीक्षा से पहले ब्रेकफॉस्ट

बस अड्डे पर गहमागहमी

दूसरे दिन भी सीईटी परीक्षा के लिए रहेगी फ्री यात्रा, शटल व ठहराव की समुचित व्यवस्था

झज्जर। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि जिले में सीईटी परीक्षा के दूसरे दिन रविवार को भी दोनों सत्रों में परीक्षा का आयोजन होगा व परीक्षार्थियों के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं यथावत जारी रहेंगी, ताकि किसी भी अभ्यर्थी को असुविधा ना हो। दूसरे दिन भी बसें निर्धारित गंतव्यों के लिए सुबह तीन बजे से रवाना होंगी, ताकि परीक्षार्थी समय पर अपने परीक्षा केंद्र पहुंच सकें। जिले से बाहर परीक्षा देने जाने वाले विद्यार्थियों के लिए हरियाणा रोडवेज की बस स्टैंड से विशेष निशुल्क शटल सेवा भी जारी रहेगी। बस स्टैंड पर हेल्प डेस्क लगेगा।

परीक्षार्थियों के साथ-साथ अभिभावकों व बच्चों ने भी दी परीक्षा

झज्जर। सीईटी परीक्षा के पहले दिन जिले के सभी 14 परीक्षा केंद्रों पर जहां परीक्षार्थियों ने परीक्षा केंद्र के अंदर वहीं अभिभावकों व बच्चों ने परीक्षा केंद्र के बाहर बैठ कर परीक्षा दी। स्थिति यह रही कि चिलचिलाती धूप के बीच जहां अभिभावक पेड़ों की छांव और दुकानों के आगे बैठे दिखाई दिए, वहीं कुछ अभिभावक अपने छोटे बच्चों को संभालते रहे। घंटों इंतजार के बाद जब परीक्षार्थी परीक्षा देकर बाहर आए तो बच्चों के खिले चेहरे देखकर अभिभावक और अधिक प्रसन्न दिखाई दिए। इसके अलावा बस स्टैंड परिसर में मेले जैसा माहौल दिखाई दिया।

तीन संदिग्ध परीक्षार्थियों को पुलिस द्वारा हिरासत में लेने की रही चर्चा नहीं हुई पुष्टिः शहर के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय और महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय में बनाए गए परीक्षा केंद्रों से पुलिस द्वारा तीन संदिग्ध परीक्षार्थियों को पुलिस द्वारा हिरासत में लेने की चरचा रही। राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय से दो और महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय से एक संदिग्ध परीक्षार्थी को पुलिस द्वारा हिरासत में लेने की बात सामने आई। लेकिन इसकी कोई पुष्टि नहीं हुई।

बिजली गुल ने बढ़ाई परेशानीः शहर के मेन बस स्टैंड पर सुबह तीन बजे अभिभावकों और परीक्षार्थियों का पहुंचना शुरू हो गया। जिसके कारण बस स्टैंड परिसर में मेले जैसा माहौल बना रहा। लेकिन बिजली गुल होने के कारण स्टॉफ कर्मचारियों, अभिभावकों व परीक्षार्थियों का काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा।

जिप चेयरमैन ने किया पानी का प्रबंधः जिप चेयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना ने कहा कि परीक्षार्थियों और उनके अभिभावकों के लिए सभी परीक्षा केंद्रों के बाहर पानी का प्रबंध किया गया है। उन्होंने कहा कि प्रयास यह रहेगा कि अभिभावकों को गर्मी से बचाव के लिए टेंट लगाने की भी सभी परीक्षा केंद्रों के बाहर व्यवस्था की जाएगी।

शहर में बनी रही जाम की स्थितिः सीईटी परीक्षा के कारण परीक्षा केंद्रों के बाहर पुलिस द्वारा नाकाबंदी की गई और यातायात व्यवस्था को दुरूस्त करने के लिए रूट डायवर्ट किए गए। जिसके कारण दिनभर शहर में जाम की स्थिति बनी रही। शहरवासियों को भी अपने गंतव्य तक पहुंचने में परेशानी हुई।

पेड़ों के नीचे बैठे रहे परिजन

अपने बच्चों को परीक्षा दिलवाने आए अभिभावकों के लिए भी यह परीक्षा की घड़ी ही रही। चिलचिलाती धूप के बीच अभिभावक पेड़ों की छांव और दुकानों के बाहर परीक्षा समाप्त होने का इंतजार करते हुए दिखाई दिए। अभिभावकों का कहना है कि बच्चों के भविष्य के लिए कष्ट सहन करने ही पड़ते है।

परीक्षा केंद्र पर परीक्षार्थियों को हुई परेशानी : सीईटी परीक्षा के दौरान परीक्षार्थियों को शहर के महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय में बनाए गए परीक्षा केंद्र तक पहुंचने में परेशानी का सामना करना पड़ा। परीक्षार्थियों का कहना रहा कि परीक्षा केंद्र शहर की बीचों-बीच स्थित होने के कारण जहां उसे तलाशने में परेशानी आई वहीं शटल बस सेवा द्वारा भी उन्हें सिलानी गेट पर उतार दिया गया। ऐसे में लोगों से रास्ते पूछते हुए केंद्र तक पहुंचे। अपनी पत्नी को परीक्षा दिलाने पहुंचे रेवाड़ी जिले के चांदनवास निवासी जगदीश ने बताया कि वह फिलहाल मानेसर रहता है। उसके दो बच्चों में से एक अभी करीब तीन माह का है। ऐसे में वह रात करीब डेढ़ बजे अपने गांव पहुंचा तथा वहां रेवाड़ी पहुंच कर उसने झज्जर की बस पकड़ी। इसके बाद स्थानीय बस स्टैंड पर लगी शटल सेवा बस से वह अपनी पत्नी और दोनों बच्चों के साथ परीक्षा केंद्र तक पहुंचा।

स्वास्थ्य विभाग की टीम ने किया भंडाफोड़, डॉक्टर व अन्य पर केस

कथित बीएएमएस डॉक्टर के क्लीनिक में चल रहा था लिंग जांच और गर्भ में हत्या का खेल

- लिंग जांच के लिए 55 हजार लेने व गर्भपात के लिए 25 हजार मांगने का आरोप

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

पीएनडीटी टीम द्वारा अवैध रूप से लिंग जांच एवं गर्भपात करने वाले गिरोह का भंडाफोड़ किया है। टीम ने गिरोह की मास्टरमाइंड महिला डॉक्टर सहित अन्य पर मुकदमा दर्ज करवाया। सीएमओ डॉक्टर जयमाला ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर जिला समुचित प्राधिकरण ने एक टीम का गठन किया। जिसमें पीएनडीटी नोडल अधिकारी डॉक्टर संदीप कुमार, डॉक्टर आकृति हुड्डा, डॉक्टर हर्षदीप व विनोद कुमार शामिल रहे। इनके अलावा पीएनडीटी मेंबर्स के सहयोग के लिए एक टीम का डीसीपी जसलीन कौर ने भी गठन किया। टीम द्वारा कार्रवाई करते हुए गिरोह के भंडाफोड़ के लिए चार माह की गर्भवती एक मिथ्या ग्राहक को तैयार किया। जिसके बाद बीती 17 जुलाई को मिथ्या ग्राहक ने पीएनडीटी टीम के कहने पर कथित महिला डॉक्टर को फोन करते हुए कहा कि उसको पहले तीन लड़कियां हैं और उसको अब लड़का चाहिए। इसलिए वह आपसे अल्ट्रासाउंड जांच कराना चाहती है। कुछ देर बातचीत के बाद कथित महिला डॉक्टर द्वारा 55 हजार रुपये में लिंग जांच का सौदा तय करते हुए उसे पैसे लेकर शिव कालोनी बेरी गेट स्थित अपने निवासी पर बुलाया। इसके उपरांत पीएनडीटी टीम ने मिथ्या ग्राहक को 55 हजार रुपये देकर कथित महिला डॉक्टर के घर भेजा। पैसे लेने के बाद कथित महिला डॉक्टर ने अगले दिन रात आठ बजे अल्ट्रासाउंड करने की बात कही। इसके बाद जब कथित महिला डॉक्टर को फोन किया तो वह अगले दिन आने की बात कहती रही। 24 जुलाई को उसने फिर से 25 जुलाई की रात साढ़े सात बजे आने की बात कही। आखिरकार 25 जुलाई को कथित महिला डॉक्टर ने मिथ्या ग्राहक को अपने निजी क्लीनिक पर आशीष नामक व्यक्ति से अवैध लिंग जांच कराई। जांच में पता चला कि यह व्यक्ति नांगलोई से पोर्टेबल अल्ट्रासाउंड मशीन लेकर शहर आता है। इसके बाद मिथ्या ग्राहक को गर्भ में लड़की होने की बात बताई और कहा कि कल आ जाना इसकी सफाई कर देंगे। इसके बदले 25 हजार रुपये अतिरिक्त लगेंगे। सीएमओ के अनुसार इसके बाद कथित महिला डॉक्टर ने स्कूटी पर अपने बेटे विक्रम को बुलाया और उसकी मदद से मिथ्या ग्राहक को अपने घर ले आई। मिथ्या ग्राहक ने घर के पास खड़े पीएनडीटी टीम सदस्यों को इशारा किया। इशारा पाकर टीम सदस्य कथित महिला डॉक्टर के घर पहुंचे। छानबीन के दौरान टीम को कथित महिला डॉक्टर के घर से गर्भपात की दवाइयां और औजार मिले। इसके बाद जब टीम कथित महिला डॉक्टर और मिथ्या ग्राहक के साथ संगम क्लीनिक आई तब तक अवैध अल्ट्रासाउंड करने वाला व्यक्ति मशीन के साथ फरार हो चुका था। पीएनडीटी टीम ने कथित महिला डॉक्टर, उसके पुत्र विक्रम एवं आशीष के खिलाफ पीसी पीएनडीटी व अन्य धाराओं के तहत केस दर्ज किया है।

- एक आरोपी पार्टेबल अल्ट्रासाउंड मशीन लेकर फरार

झज्जर। पीएनडीटी टीम की गिरफ्त में कथित महिला डॉक्टर।

पांच साल में पैसों को डबल, ट्रिपल करने वाले सात फंड, निवेशकों को बड़ा फायदा

- हाइब्रिड कैटेगरी की स्कीम्स ने इक्विटी को दी कड़ी टक्कर
- बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स ने 5 साल में दिया बढ़िया रिटर्न
- निवेशकों के पैसों को दो से तीन गुना तक कर दिया

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड्स से हाई रिटर्न हासिल करने की बात हो तो आम तौर पर हमारा ध्यान इक्विटी स्कीम की तरफ ही जाता है, लेकिन हाइब्रिड फंड्स की एक कैटेगरी ऐसी है, जो निवेशकों को ऊंचा रिटर्न देने के मामले में इक्विटी फंड्स को टक्कर दे सकती है। ये कैटेगरी है डायनैमिक एसेट एलोकेशन फंड्स यानी बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स की। इस कैटेगरी के टॉप 7 फंड्स ने 5 साल में निवेशकों के पैसों को डबल-ट्रिपल करके दिखाया है। साथ ही सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) पर भी इनका सालाना रिटर्न काफी आकर्षक रहा है। इन टॉप 7 बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स में एचडीएफसी म्यूचुअल फंड, निप्पॉन इंडिया, आईसीआईसीआई प्रू, टाटा म्यूचुअल फंड, बड़ौदा बीएनपी परीबा और आदित्य बिरला सनलाइफ जैसे दिग्गज फंड हाउस की स्कीम शामिल हैं।

ऐसा रहा प्रदर्शन

टॉप 7 बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स का पिछले 5 साल का एनुअल रिटर्न करीब 15% से 24% तक रहा है. इन सभी फंड्स ने 5 साल पहले किए गए 1 लाख रुपये के निवेश को दो लाख से तीन लाख रुपये में तब्दील कर दिया है. इतना ही नहीं, इन सभी फंड्स ने **SIP** के जरिये किए गए निवेश पर भी साल दर साल 13% से लेकर 21% तक का एन्युलाइज्ड रिटर्न दिया है. आइए डालते हैं इन सभी फंड्स के पिछले प्रदर्शन पर एक नजर।

1. एचडीएफसी बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
- 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 24.62%
- 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 3 लाख रुपये
- 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 10.12 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न: 21.02%)

2. बड़ौदा बीएनपी परीबा बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
- 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 17.03%
- 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.20 लाख रुपये
- 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.89 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न: 15.74 %)

3. एडेलवाइज बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
- 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.92%
- 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.09 लाख रुपये
- 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.44 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 13.6%)

4. आदित्य बिरला सनलाइफ बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
- 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.71%
- 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.08 लाख
- 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.60 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 14.4%)

5 साल में 15 से 24% तक एनुअल रिटर्न दिया

5. निप्पॉन इंडिया बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
- 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.67%
- 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.07 लाख रुपये
- 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.52 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 14.02%)

6. आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
- 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.52%
- 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.06 लाख रुपये
- 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.52 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 13.99%)

7. टाटा बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
- 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 14.99%
- 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.01 लाख रुपये
- 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.32 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 13.03%)

बेंचमार्क और रिस्क लेवल

इन सभी हाइब्रिड फंड्स का बेंचमार्क इंडेक्स इन दो में से कोई एक है - निफ्टी 50 हाइब्रिड कंपोजिट डेट 50:50 इंडेक्स, जिसका पिछले 5 साल का सीएजीआर 12.70% रहा है या क्रिसिल हाइब्रिड 50+50 मॉडरेट इंडेक्स, जिसका 5 साल का सीएजीआर 13.62% है। सभी 7 फंड्स को रिस्कोमीटर पर बहुत अधिक जोखिम की रेटिंग दी गई है।

बैलेंस्ड एडवांटेज फंड की निवेश रणनीति

पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट के बीच फंड एलोकेशन को वक्त के हिसाब से बदलने की रणनीति बैलेंस्ड एडवांटेज फंड या डायनैमिक एसेट एलोकेशन फंड (**Balanced Advantage Fund or Dynamic Assest Allocation**) की सबसे बड़ी खूबी है. इस रणनीति की बदौलत ये म्यूचुअल फंड बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच भी बेहतर और स्टेबल रिटर्न देने की क्षमता रखते हैं. सेबी के नियमों के तहत इन फंड्स के मैनेजर को इक्विटी और डेट के बीच अपना फंड एलोकेशन जीरो से 100% तक बदलते रहने की छूट मिली हुई है। इस रणनीति का एक फायदा यह भी है कि अगर फंड मैनेजर इक्विटी में निवेश को 65% या उससे ऊपर रखता है, तो इसमें निवेश पर इक्विटी फंड्स की तरह टैक्स बेनिफिट भी मिल सकते हैं। हालांकि इक्विटी में ज्यादा एक्सपोजर की संभावना के कारण बैलेंस्ड एडवांटेज फंड में रिस्क भी अधिक रहता है. इसलिए इनमें निवेश का फैसला करने से पहले अपनी रिस्क बर्दाश्त करने की क्षमता को परख लेना चाहिए और हमेशा लंबी अवधि के लिए पैसे लगाने की तैयारी रखनी चाहिए. साथ ही यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि म्यूचुअल फंड का पिछला रिटर्न भविष्य में जारी रहने की गारंटी नहीं होती।

(डिस्क्लेमर : इस आर्टिकल का उद्देश्य सिर्फ जानकारी देना है, निवेश की सलाह देना नहीं, निवेश का कोई भी फैसला अपने इनवेस्टमेंट एडवाइजर की सलाह लेने के बाद ही करें।)

जीवन में आगे बढ़ने के साथ-साथ, बढ़ाते जाएं अपना निवेश, जल्द बनेंगे करोड़पति

सुझाव
बिजनेस डेस्क

- हमेशा लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर चलें, इससे बढ़िया रिटर्न मिलेगा
- अपनी रिस्क क्षमता को जांच लें, अनावश्यक खर्चों पर रोक लगाएं
- हर साल अपने सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान को भी अपग्रेड करें
- अपनी कमाई का कम से कम दस फीसदी हिस्सा बचत में लगाएं

अगर आप भी निवेश के जरिये अच्छा पैसा जुटाना चाहते हैं तो अपने जीवन में आगे बढ़ने के साथ साथ निवेश को भी बढ़ाते जाएं। इससे आपको जल्द करोड़पति बनने से कोई नहीं रोक पाएगा। आप अपने सपने आसानी से पूरे कर पाएंगे। इसके लिए जरूरी है, अपने लक्ष्य तय करें और लंबी अवधि के लिए निवेश का प्लान बनाए। अपने जीवन में आगे बढ़ने के साथ साथ निवेश को भी बढ़ाते जाएं यानी निवेश के लिए स्टेप-अप एसआईपी के फार्मूले को अपनाएं। अपने अनावश्यक खर्चों पर लगाम लगाएं और अपनी इनकम का कम से कम दस फीसदी निवेश जरूर करें और इसे हर साल बढ़ाते जाएं। फिर देखना आपका पैसा दिन दूनी और रात चौगुनी के साथ बढ़ेगा। नए अवसर, बड़े सपने और बदलती जीवनशैली के साथ जीवन आगे बढ़ते रहने की कहानी है। जैसे-जैसे आपकी आय बढ़ती है, वैसे-वैसे आपकी ख्वाहिशें और खर्च भी बढ़ते हैं। क्या आपकी निवेश रणनीति भी इसी रफ्तार से आगे बढ़ रही है? जिस तरह आप अपने सपनों की नई बाइक खरीदते हैं, या बेहतर घर में शिफ्ट होते हैं, उसी तरह जरूरी है कि आप अपने एसआईपी (सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान) को भी अपग्रेड करें ताकि, वो आपके बदलते जीवन के साथ कदम से कदम मिला सके। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि स्टेप-अप एसआईपी (एसआईपी राशि को बढ़ाना) क्या है और कैसे यह आपको वित्तीय रूप से आगे बनाए रखने में मदद करता है।

स्टेप-अप एसआईपी क्या है

- स्टेप-अप एसआईपी (जिसे टॉप-अप एसआईपी भी कहा जाता है) एक ऐसी सुविधा है जिसमें आप अपने एसआईपी निवेश को तय अंतराल पर (सालाना या अर्धवार्षिक) एक निश्चित राशि या प्रतिशत के हिसाब से बढ़ा सकते हैं। इसका मतलब है कि हर महीने एक ही राशि निवेश करने की बजाय, आप जैसे-जैसे कमाते हैं, वैसे-वैसे अपना निवेश भी बढ़ाते हैं। इसलिए स्टेप-अप एसआईपी जरूरी : बढ़ती आय और खर्चों के साथ तालमेल
- जब आपकी सैलरी बढ़ती है या प्रमोशन होता है, तो आपकी जीवनशैली भी बेहतर होती है। शायद आप नई बाइक खरीदते हैं, बेहतर फ्लैट में शिफ्ट होते हैं, या खूब घूमते हैं। ऐसे में खर्च बढ़ता है और आर्थिक लक्ष्य भी बड़े हो जाते हैं। एसआईपी को स्टेप-अप करके आप यह सुनिश्चित करते हैं कि आपकी बढ़ती आय और आकांक्षाओं के साथ आपके निवेश का तालमेल बना रहे।

महंगाई को मात

हर साल महंगाई की वजह से जीवन-यापन में होने वाला खर्च बढ़ता रहता है। अगर आपकी एसआईपी की राशि एक समान ही रहती है, तो भविष्य में वह आपकी जरूरतों, लक्ष्यों को पूरा नहीं कर पाएगी। एसआईपी बढ़ाने से आपका निवेश तेजी से बढ़ता है और आप महंगाई के असर से बेपरवाह रह सकते हैं।

स्टेप-अप एसआईपी कैसे काम करता है?

- मान लीजिए आप 5,000 रुपये प्रति माह की एसआईपी शुरू करते हैं, जिसमें हर साल 1,000 रुपये स्टेप-अप करते हैं।
- पहले साल में, आप 5,000 रुपये/माह निवेश करते हैं
- दूसरे साल में, यह 6,000 रुपये/माह हो जाता है
- तीसरे साल में, 7,000 रुपये/माह, और यह इसी तरह आगे बढ़ता है।
- इस तरह धीरे-धीरे बढ़ती एसआईपी आपकी बढ़ती सैलरी के साथ मेल खाती है। जैसे-जैसे आपका वेतन बढ़ता है, आपका निवेश भी बढ़ता है और आपकी जेब पर भी एकसाथ ज्यादा बोझ नहीं पड़ता।

असरदार तरीका

स्टेप-अप एसआईपी यह सुनिश्चित करने का एक आसान, लेकिन असरदार तरीका है कि आपका निवेश आपकी जिंदगी की गति के साथ आगे बढ़े। जैसे-जैसे आपकी आमदनी और जरूरतें बढ़ती हैं आप अपनी एसआईपी को बढ़ाकर नए सपनों और आर्थिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए बेहतर ढंग से तैयार होंगे।

बड़े लक्ष्य जल्दी हासिल करें

स्टेप-अप एसआईपी के ज़रिए आप अपने आर्थिक लक्ष्यों को जल्दी हासिल कर सकते हैं। इसकी मदद से आप बड़े सपनों जैसे लग्ज़री कार, विदेश यात्रा या रिटायरमेंट के लिए बड़ी रकम को भी बिना किसी आर्थिक तनाव के हसिल कर सकते हैं।

चक्रवृद्धि ब्याज की ताकत का जादू

हर साल एसआईपी की राशि थोड़ी सी भी बढ़ाने पर लंबे समय में आपकी संपत्ति में बड़ा फ़र्क देखने को मिल सकता है। जितनी जल्दी और जितना अधिक आप निवेश करते हैं, रिटर्न उतना ही ज़्यादा होता है। इसी को चक्रवृद्धि ब्याज़ की ताकत कहते हैं।

आईटीआर फाइलिंग : कुछ गलतियों की वजह से आ सकता है नोटिस

●जुर्माना भी लग सकता है और रिटर्न रिजेक्ट होने का भी रहता है खतरा ● टैक्सपेयर्स अक्सर आईटीआर फॉर्म चुनने में कर जाते हैं बड़ी गलतियां ● वेरिफिकेशन में गलती करते हैं, तो बढ़ सकती है आपकी परेशानी

जानकारी
बिजनेस डेस्क

इनकम टैक्स रिटर्न (आईटीआर) फाइल करना हर साल टैक्सपेयर्स के लिए एक जरूरी काम होता है, लेकिन कई बार इसमें छोटी-छोटी गलतियां उनके लिए भारी पड़ जाती हैं। वित्त वर्ष 2024-25 (असेसमेंट ईयर 2025-26) के लिए इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने की आखिरी तारीख 15 सितंबर 2025 तक है। इस बीच इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने आईटीआर-1, 2, 3 और 4 के लिए एक्सेल यूटिलिटी जारी कर दी हैं, जिससे प्रक्रिया शुरू करने का रास्ता साफ हो गया है। हालांकि, जल्दबाजी या जानकारी की कमी के कारण कई बार टैक्सपेयर्स ऐसी गलतियां कर बैठते हैं, जो नोटिस, जुर्माना या रिटर्न के रद्द होने का कारण बन सकती हैं। आइए जानते हैं, सात ऐसी आम गलतियों के बारे में, जिनसे टैक्सपेयर्स को बचना चाहिए।

गलत आईटीआर फॉर्म चुनना

सबसे आम गलती है गलत आईटीआर फॉर्म का चयन। हर फॉर्म खास तरह की आय और टैक्सपेयर्स के लिए बनाया गया है। मिसाल के तौर पर, अगर आपने शेयरों की बिक्री से 1.25 लाख रुपये से ज्यादा का लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेन कमाया है या आपके पास किसी विदेशी बैंक में अकाउंट है, तो आप आईटीआर-1 की जगह आईटीआर-2 भरना होगा। गलत फॉर्म चुनने से आपकी रिटर्न 'डिफेक्टिव' मानी जा सकती है या इनकम टैक्स डिपार्टमेंट से नोटिस आ सकता है। इसलिए, अपनी आय के सोर्स को ध्यान से देखें और सही फॉर्म चुनें।

सभी आय के सोर्स न बताना

कई टैक्सपेयर्स अपनी सारी आय को रिटर्न में नहीं दिखाते, चाहे वह टैक्सेबल हो या नहीं। मसलन, बचत खाते का ब्याज, फिक्स्ड डिपॉजिट का ब्याज, किराए की आय या शेयरों से डिविडेंड को छिपाना गलत है। भले ही बचत खाते के ब्याज पर 10,000 रुपये तक की छूट मिलती हो, लेकिन इसे रिटर्न में दिखाना जरूरी है। आय छिपाने से इनकम टैक्स डिपार्टमेंट की नजर में आप गलत ठहर सकते हैं, जिससे नोटिस या जुर्माना लग सकता है।

नौकरी बदलने पर आय छिपाना

अगर आपने वित्त वर्ष में नौकरी बदली है, तो दोनों एम्प्लॉयर्स से मिली आय को रिटर्न में दिखाना जरूरी है। दोनों की फॉर्म-16 को ध्यान से देखें और सुनिश्चित करें कि कोई आय छूट न जाए। कई बार टैक्सपेयर्स पुराने एम्प्लॉयर की आय या टीडीएस की जानकारी छोड़ देते हैं, जो गलत है। एआईएस में आपकी सारी आय की जानकारी होती है, इसलिए इसे छिपाने की कोशिश न करें, वरना नोटिस का सामना करना पड़ सकता है।

फॉर्म 26एएस की जांच न करना

रिटर्न फाइल करने से पहले फॉर्म 26 एएस और एनुअल इन्फॉर्मेशन स्टेटमेंट (एआईएस) की जांच करना जरूरी है। ये डॉक्यूमेंट्स आपकी आय, टीडीएस और बड़े लेनदेन की जानकारी देते हैं। अगर इनमें कोई गलती है, जैसे बैंक द्वारा काटा गया टीडीएस गलत दिख रहा हो, तो उसे ठीक करवाएं। इन डॉक्यूमेंट्स का मिलान फॉर्म-16, बैंक स्टेटमेंट और अन्य रिकॉर्ड से करें। अगर जानकारी में अंतर हुआ, तो इनकम टैक्स डिपार्टमेंट से नोटिस आ सकता है।

गलत डिडक्शन का दावा करना

कई टैक्सपेयर्स बिना सबूत के सेक्शन 80सी, 80डी या अन्य छूट का दावा कर लेते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चों की स्कूल फीस, एलआईसी प्रीमियम या मेडिकल इंश्योरेंस के लिए छूट तभी ले सकते हैं, जब आपके पास वैध डॉक्यूमेंट हों। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट अब एआईएस और एआई टूल्स के जरिए ऐसी गलतियों को आसानी से पकड़ लेता है। अगर आप बिना सबूत के छूट लेते हैं, तो नोटिस मिल सकता है या रिटर्न रद्द हो सकता है।

विदेशी संपत्ति की जानकारी न देना

अगर आपके पास विदेशी बैंक खाता, शेयर या दूसरी संपत्ति है, तो उसे रिटर्न में बताना जरूरी है। बजट 2024 में नियमों में थोड़ी ढील दी गई है, जिसमें 20 लाख रुपये तक की चल संपत्ति को न दिखाने की छूट दी गई है। लेकिन इसके बावजूद, पूरी जानकारी देना अनिवार्य है। विदेशी संपत्ति छिपाने पर पहले 10 लाख रुपये तक का जुर्माना लगता था, लेकिन नए नियमों के बावजूद सावधानी बरतें।

रिटर्न का वेरिफाई न करना

रिटर्न फाइल करने के बाद उसे 30 दिनों के अंदर वेरिफाई करना जरूरी है। यह सत्यापन आधार ओटीपी , नेट बैंकिंग या आईटीआर वी को डाक से भेजकर किया जा सकता है। अगर आप वेरिफाई नहीं करते, तो रिटर्न को अमान्य माना जाता है, जैसे कि आपने रिटर्न फाइल ही नहीं किया। कई टैक्सपेयर्स यह भूल जाते हैं, जिससे उनकी रिटर्न प्रक्रिया अधूरी रह जाती है और जुर्माना लग सकता है।

ऋण | एमएफ लोन पर ब्याज दर सोने या एफडी पर लोन से अधिक, लोन लेने का फैसला करने से पहले सभी विकल्पों पर विचार करें

अपने म्यूचुअल फंड निवेश को बेचने के बजाय, आप उन पर लोन ले, इससे आपकी एसआईपी चलती रहेगी

म्यूचुअल फंड पर भी ले सकते हैं लोन, लेकिन जान लें कुछ बातें क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन की तुलना में एमएफ पर लोन सस्ता

समझदारी
बिजनेस डेस्क

अगर आप भी लोन लेन जा रहे हैं और म्यूचुअल फंड (एमएफ) में निवेश करते हैं जो आपके लिए म्यूचुअल फंड पर लोन लेना बेहतर विकल्प हो सकता है। चूंकि म्यूचुअल फंड पर लोन क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन की तुलना में काफी सस्ता होता है। हालांकि इसकी ब्याज दर सोने या एफडी पर लोन लेने की तुलना में अधिक हो सकती हैं। फिर भी लोन लेने से पहले सभी विकल्पों पर विचार कर लिया जाना चाहिए। इससे आप आसानी से और सस्ती ब्याज दरों पर लोन ले सकेंगे। जीवन में कई कारणों से कभी-कभी अस्थायी रूप से पैसों की तंगी का सामना करना पड़ सकता है। उदाहरण के लिए, यह घर के नवीनीकरण, परिवार में शादी या किसी चिकित्सा आपात स्थिति के कारण हो सकता है। ऐसी नकदी की तंगी की स्थिति में, सबसे पहला विचार यही आता है कि अपनी बचत का इस्तेमाल करें और नुकसान होने पर भी अपने निवेश को बेच दें। और अगर इससे भी काम न चले, तो आप ऋण लेने की सोचते हैं। हालांकि, निवेश को बेचना सबसे अच्छा उपाय नहीं है। अपने म्यूचुअल फंड निवेश को बेचने के बजाय, आप उन पर लोन ले सकते हैं। जी हां, जैसे आप लोन के लिए सोना और रियल एस्टेट जैसी अन्य संपत्तियां गिरवी रख सकते हैं, वैसे ही आप बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) से अपने म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स पर लोन ले सकते हैं। एमएफ पर लोन लेने से पहले आप 6 प्रमुख बातों के बारे में जान लें। ये आपके काफी काम आएंगी।

म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स की एक सीमा तक ही ऋण मिलेगा

आपके म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स के बदले आपको मिलने वाले ऋण की राशि काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि आपने किस प्रकार की म्यूचुअल फंड योजना में निवेश किया है और आप किस वित्तीय संस्थान से ऋण लेंगे। उदाहरण के लिए, एचडीएफसी और आईसीआईसीआई जैसे बैंक आपको इक्विटी म्यूचुअल फंड के मामले में नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) के 50% तक और डेट म्यूचुअल फंड के मामले में 80% तक का लोन देते हैं। दूसरी ओर, एक्सिस बैंक आपकी डेट म्यूचुअल फंड योजनाओं के मूल्य के 85% तक और इक्विटी म्यूचुअल फंड योजनाओं के मूल्य के 60% तक का लोन प्रदान करता है।

सभी बैंक सभी म्यूचुअल फंडों पर ऋण नहीं देते

कई बैंक केवल उनके द्वारा चयनित म्यूचुअल फंड योजनाओं के आधार पर ही ऋण देते हैं। उदाहरण के लिए, एसबीआई केवल एसबीआई म्यूचुअल फंड की म्यूचुअल स्कीमों पर ही ऋण देता है। एचडीएफसी बैंक और आईसीआईसीआई बैंक भी उन स्कीमों के बारे में चयनात्मक हैं जिन पर वे ऋण देते हैं। ये दोनों निजी बैंक कंप्यूटर एज मैनेजमेंट सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड (सीएमएस) के साथ पंजीकृत एसेट मैनेजमेंट कंपनियों द्वारा प्रबंधित म्यूचुअल फंड स्कीमों पर ऋण प्रदान करते हैं। इसी प्रकार, एक्सिस बैंक ने अपनी वेबसाइट पर म्यूचुअल फंड योजनाओं का एक सेट सूचीबद्ध किया है, जिसके आधार पर वह धन उधार देता है।

मिलने वाला ऋण राशि की ऊपरी सीमा

किसी भी प्रकार के ऋण की तरह, म्यूचुअल फंड पर दिए जाने वाले ऋणों की भी कुछ सीमाएं होती हैं। कई बैंकों ने आपको मिलने वाले ऋण की अधिकतम और न्यूनतम सीमा तय कर रखी है। उदाहरण के लिए, आईसीआईसीआई बैंक जैसे अधिकांश बड़े निजी बैंकों ने इक्विटी म्यूचुअल फंड के मामले में न्यूनतम ऋण राशि 50,000 रुपये और अधिकतम राशि 20 लाख रुपये तथा डेट म्यूचुअल फंड के मामले में 1 करोड़ रुपये तक निर्धारित की है। एनबीएफसी के मामले में, न्यूनतम और अधिकतम दोनों सीमाएं आमतौर पर ज़्यादा होती हैं। उदाहरण के लिए, आदित्य बिड़ला फाइनेंस में न्यूनतम ऋण राशि 25 लाख रुपये और अधिकतम 10 करोड़ रुपये है। बजाज फिनसर्व के मामले में भी यही स्थिति है।

ऋण की लागत व्यक्तिगत ऋण व क्रेडिट कार्ड ऋण से कम

म्यूचुअल फंड पर लोन का एक प्रमुख लाभ यह है कि आपको क्रेडिट कार्ड लोन या पर्सनल लोन की तुलना में कम ब्याज दर मिलती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि म्यूचुअल फंड पर लोन सुरक्षित होते हैं, यानी उनके पीछे कोई संपार्श्विक होता है। उदाहरण के लिए, आपको म्यूचुअल फंड पर लिए गए लोन पर 8-10% की ब्याज दर चुकानी होगी। यह आपके द्वारा चुनी गई बैंक और म्यूचुअल फंड योजनाओं के आधार पर अलग-अलग होगा। अगर आप डेट फंड योजनाओं की यूनिटें गिरवी रखते हैं तो ब्याज दर कम होती है, और अगर आप इक्विटी फंड की यूनिटें गिरवी रखते हैं तो ब्याज दर ज़्यादा होती है।
दूसरी ओर, क्रेडिट कार्ड लोन या पर्सनल लोन जैसे असुरक्षित लोन के मामले में, लोन आपकी किसी भी वित्तीय संपत्ति द्वारा समर्थित नहीं होता है। इसलिए, बैंक द्वारा उठाए जा रहे उच्च जोखिम के अनुरूप, आपसे 8-10% से अधिक ब्याज दर वसूलने की संभावना होती है।

गिरवी रखी गई एमएफ यूनिटों पर रिटर्न मिलता रहेगा

जब आप अपनी म्यूचुअल फंड यूनिट्स को गिरवी रखकर उन पर लोन लेते हैं, तो वे यूनिट्स बाजार में निवेशित रहती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब आप अपनी म्यूचुअल फंड यूनिट्स किसी बैंक में गिरवी रखते हैं, तो आप बैंक को यह अधिकार देते हैं कि वह म्यूचुअल फंड यूनिट्स को तभी बेचे जब आप डिफॉल्ट करें। लेकिन जब तक आप डिफॉल्ट नहीं करते, तब तक आपके निवेश बाजार से जुड़े रहते हैं और आप उन पर रिटर्न कमाते रहते हैं। इस प्रकार, आप यह सुनिश्चित करते हैं कि आपकी वित्तीय योजना अभी भी बरकरार है और साथ ही आप किसी भी यूनिट को भुनाए बिना अल्प सूचना पर आवश्यक पूंजी जुटा सकते हैं।

ऑनलाइन कर सकते हैं आवेदन

तकनीक की बदौलत, एसबीआई, एचडीएफसी, आईसीआईसीआई जैसे कई बैंक अब आपके म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स पर ऑनलाइन लोन दे रहे हैं। आपको बस अपनी म्यूचुअल फंड यूनिट्स ऑनलाइन गिरवी रखनी हैं और अपने खाते में ओवरड्राफ्ट लिमिट सेट करवानी है। ओवरड्राफ्ट सुविधा का मतलब है आपके बैंक के साथ एक क्रेडिट समझौता जिसके तहत आप अपने खाते में जमा राशि से ज़्यादा पैसे निकाल सकते हैं। इसकी एक पूर्व-स्वीकृत सीमा होती है।

राष्ट्र के लिए दिया गया बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता, वह इतिहास में अमर हो जाता है

पोस्टर व स्लोगन बनाकर दी शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि

■ कारगिल विजय दिवस केवल एक युद्ध की जीत नहीं, बल्कि सत्य, संयम और सामर्थ्य के प्रतीक हमारे वीर सैनिकों की प्रेरक गाथा है

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

कारगिल विजय दिवस के अवसर पर वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय में शहीदों की स्मृति में स्वयंसेविकाओं ने पोस्टर व स्लोगन बनाकर श्रद्धांजलि अर्पित की। साथ ही प्राचार्या डॉ. आशा शर्मा ने स्वयंसेविकाओं के साथ पौधरोपण कर शहीद सैनिकों को नमन किया।

पोस्टर प्रतियोगिता में दीपिका वत्स प्रथम, जानवी व जया कुमारी द्वितीय रही। सविता व भावना रोहिल्ला तृतीय स्थान पर रही। स्लोगन लेखन प्रतियोगिता में खुशी प्रथम और आरती द्वितीय स्थान पर रही। प्राचार्या डॉ. आशा शर्मा ने कहा कि कारगिल विजय दिवस केवल एक युद्ध की जीत नहीं, बल्कि सत्य, संयम और सामर्थ्य के प्रतीक हमारे वीर सैनिकों की प्रेरक गाथा है। राष्ट्र के लिए दिया गया बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता, वह इतिहास में अमर हो जाता है। देश की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर सपूतों की स्मृति में हर वर्ष इस दिन को मनाना हमारा कर्तव्य है। सविता, खुशी, आरती, दीपिका वत्स, भावना रोहिल्ला, जया कुमारी, जानवी आदि ने स्लोगन एवं पोस्टर बनाकर वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वयंसेविकाओं ने पोस्टर व स्लोगन के माध्यम से शहीदों की वीरता और बलिदान को सम्मान देते हुए देशभक्ति और एकता का संदेश दिया। स्वयंसेविकाओं ने महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ आशा शर्मा के साथ पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प भी लिया।

बहादुरगढ़। पोस्टर बनाकर शहीदों को नमन करती स्वयंसेविका, राष्ट्रीय अखंडता की शपथ लेते एनएसएस स्वयंसेवक। फोटो :हरिभूमि

देश की अखंडता की शपथ ली

बहादुरगढ़। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बहादुरगढ़ के एनएसएस स्वयंसेवकों ने कारगिल विजय दिवस की 26वीं वर्षगांठ पर भारतीय सैनिकों के बलिदान को याद किया। उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए शपथ ली कि देश को धर्म और जाति के नाम पर बंटने नहीं देंगे। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी राकेश वत्स ने कहा कि प्रत्येक क्षेत्र में ईमानदारी से अपना काम करके हम देश सेवा कर सकते हैं। देश की अखंडता की शपथ ली

सैनिकों की शहादत राष्ट्र की अमूल्य धरोहर : डीसी

झज्जर। कारगिल युद्ध स्मारक पर पुष्प अर्पित कर कारगिल शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल। फोटो :हरिभूमि

झज्जर। कारगिल विजय दिवस पर डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बाल भवन स्थित कारगिल युद्ध स्मारक पर पुष्प अर्पित करते हुए वीर शहीदों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि सन 1999 में आज ही के दिन हमारे देश के वीर योद्धाओं ने दुश्मन सेना को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया था। कारगिल युद्ध में जिला झज्जर के वीरों सैनिकों का अमूल्य योगदान रहा। उन्होंने कहा कि जिला के कई वीर सैनिकों ने मातृभूमि की रक्षा करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। शहीद वीर सैनिकों की शहादत को आज पूरा देश सलाम कर रहा है। जिन्होंने कारगिल युद्ध में भारत माता के लिए जीवन को न्यौछावर कर दिया। सैनिकों की शहादत राष्ट्र की अमूल्य धरोहर होती है और युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी।

अमर शहीद कर्ण सिंह के परिजनों को किया सम्मानित

झज्जर। गुजरात में आए चक्रवाती तूफान के दौरान समुद्र में फंसे लोगों की जान बचाने वाले जिले के जांबाज सैनिक शहीद कर्ण सिंह के परिजनों को सूरत की जय जवान नागरिक समिति द्वारा कारगिल विजय दिवस पर सम्मानित किया गया है। सूरत में आयोजित समर्पण गौरव समारोह के दौरान क्षेत्र के गांव डावला निवासी शहीद कर्ण सिंह की मां सुमित्रा देवी, पत्नी आरती कुमारी व छोटे भाई अर्जुन सिंह को समारोह के मुख्यातिथि लेफ्टिनेंट जनरल भूपेश कुमार गोयल, दक्षेश भाई मावनी, विशेष अतिथि प्रफुल्ल पंसेरिया, संजय कुमार श्रीवास्तव, जिगनेश भाई देसाई व डॉक्टर फारुक भाईजी पटेल द्वारा सम्मानित किया गया। बता दें कि कर्ण सिंह भारतीय तटरक्षा दल में कोस्ट गार्ड के रूप में कार्यरत था। वह बीते वर्ष दो सितंबर को गुजरात के पोरबंदर में आए चक्रवाती तूफान के चलते समुद्र में फंसे लोगों की जान बचाने में जुटा था। जब वह पोरबंदर से करीब 45 किलोमीटर दूर समुंद्री क्षेत्र में भारतीय ध्वज वाले मोटर टैंकर हरिलीला पर सवार एक गंभीर रूप से घायल चालक दल के सदस्य को अपने दो अन्य साथियों के साथ ध्रुव एएलएच हेलीकॉप्टर में सवार होकर वापिस ला रहा था तो अचानक हेलीकॉप्टर को एमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी और उनका हेलीकॉप्टर समुंद्र में गिर गया था। इस हादसे में कर्ण सिंह सहित उसके दो अन्य साथी भी शहीद हो गए थे।

बहादुरगढ़। सेक्टर-2 में पौधे लगाते एसोसिएशन व मंच के सदस्य।

सेक्टर-2 में पौधे लगाकर दी शहीदों को श्रद्धांजलि

बहादुरगढ़। कारगिल विजय दिवस के मौके पर वेटरन एयर वॉरियर्स एसोसिएशन और जन रक्षा मंच के सदस्यों ने शनिवार को शहीद स्मारक पर जाकर शहीदों को नमन किया और फिर सेक्टर-2 में विशेष पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दौरान शहीदों के नाम पौधे लगाए। शनिवार को कारगिल विजय दिवस के मौके पर वेटरन एयर वॉरियर्स एसोसिएशन और जन रक्षा मंच से जुड़े भूतपूर्व सैनिकों के साथ पौधारोपण करते हुए युद्ध में शहीद हुए वीर सैनिकों को श्रद्धांजलि दी। संस्था प्रधान विजय कुमार कालीरामना ने बताया कि वर्ष 1999 में हुए कारगिल युद्ध में देश के वीर जवानों ने ऑपरेशन विजय के तहत अदम्य साहस व शौर्य दिखाते हुए दुश्मन को पराजित किया। हमें अपने वीर जवानों व अपनी सेना पर गर्व है। उनहेंने बताया कि मई से जुलाई माह तक चले कारगिल युद्ध में लगभग देश के 500 वीर सैनिकों व जांबाज अफसरों ने अपनी शहादत दी। यह पौधरोपण भारतमाता के महान सपूतों को समर्पित है। उन्होंने कहा कि हमारे देश की पवित्र धरती इन वीरों के त्याग और बलिदान से ही सुरक्षित है। कमला देवी ने बताया कि यहां योगा पार्क भी बनाया गया है, ताकि आमजन यहां योगाभ्यास कर सकें। ओमप्रकाश शर्मा, राज सिंह खत्री, डीके शर्मा, नरेंद्र दहिया, एडवोकेट अशोक अहलावत, जगबीर सिंह व कमला देवी आदि ने कहा कि देश हमेशा इन शहीदों का ऋणी रहेगा।

कर्ण सिंह के परिजनों को सम्मानित करते हुए अतिथि एवं आयोजक समिति सदस्य।

- कर्ण सिंह भारतीय तटरक्षा दल में कोस्ट गार्ड के रूप में कार्यरत था
- हेलीकॉप्टर को एमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी और उनका हेलीकॉप्टर समुंद्र में गिर गया था

हरदयाल स्कूल में लगाए पौधे

बहादुरगढ़। हरदयाल स्कूल में शहीदों की याद में पौधे लगाती अनुराधा यादव। फोटो :हरिभूमि

बहादुरगढ़। हरदयाल पब्लिक स्कूल में शनिवार को कारगिल युद्ध में शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि दी गई। सैनिकों की गौरवपूर्ण जीत और कुर्बानी को याद करते हुए स्कूल निदेशिका अनुराधा यादव ने स्कूल परिसर में पौधे लगाए। श्रुति यादव, सुनील कुमार, ममता, ज्योति, शालू, मनप्रीत, ज्योति शर्मा व अंशु ने भी पौधारोपण करके शहीदों को श्रद्धांजलि दी।

कौशिक ने किया भाजपा नेताओं का स्वागत

बहादुरगढ़। भाजपा के विधानसभा संयोजक दिनेश कौशिक ने प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल बडोली के भाई माईराम और सोनीपत जिलाध्यक्ष अनिल भारद्वाज का शनिवार को सेक्टर-2 स्थित अपने कार्यालय पर स्वागत किया। इस दौरान संगठन की मजबूती को लेकर विचार-विमर्श किया। इस अवसर पर चिराग परूथी, संजय सैनी, नरेश भारद्वाज, अमित कौशिक, शमशेर फौजी, राजेश कौशिक व कृष्ण आसौदा आदि मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। भाजपा नेता का स्वागत करते दिनेश कौशिक। फोटो :हरिभूमि

सेक्टर -छह में तीज पर्व आज, तैयारियां पूरी

■ सेक्टर के एक पार्क का चुनाव कर वहां झूले डलवाए गए तथा सेक्टर वासियों के बैठने के लिए आकर्षक टेंट व कुर्सियों की व्यवस्था की गई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन सेक्टर-छह में रविवार को तीज महोत्सव मनाया जाएगा। एसोसिएशन प्रधान अरुण नांदल ने बताया कि तीज महोत्सव के लिए उनकी एसोसिएशन द्वारा सभी आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। सेक्टर के एक पार्क का चुनाव कर वहां झूले डलवाए गए तथा सेक्टर वासियों के बैठने के लिए आकर्षक टेंट व कुर्सियों की व्यवस्था की गई हैं। इसके अलावा तीज पर्व के उपलक्ष्य में मिष्ठान के रूप में घेवर भी तैयार कराया जा रहा है। उन्होंने बताया कि एसोसिएशन सदस्यों द्वारा ग्रीन एंड क्लीन क्लब का गठन कर सेक्टर परिसर की साफ-सफाई व पौधरोपण भी किया जाता है। बीते दिनों भी वन महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत सेक्टर परिसर में जामुन, बरगद, पीपल व शीशम आदि के करीब सात सौ पौधे रोपित किए थे वहीं सेक्टर को आकर्षक रूप देने के लिए गुलमोहर, चंपा, अमलतास और बड़े-बड़े खाजूर के पेड़ भी रोपे गए हैं।

बहादुरगढ़। प्रिंसिपल दलबीर सिंह का स्वागत करते कॉलेज स्टॉफ सदस्य। फोटो :हरिभूमि

दलबीर सिंह ने संभाला प्रिंसिपल का कार्यभार

बहादुरगढ़। राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़ में दलबीर सिंह ने प्राचार्य का पदभार संभाल लिया। कॉलेज स्टॉफ व छात्रों ने उनका भव्य स्वागत करते हुए नए दायित्व के लिए शुभकामनाएं दी। दलबीर सिंह 2003 से 2023 तक राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़ में एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत रहे हैं। यहां 20 साल सेवाएं देने के बाद उनकी प्राचार्य पद पर पदोन्नति हो गई थी। वे राजकीय महाविद्यालय कुलाना में बतौर प्रिंसिपल ट्रांसफर हो गए थे। पिछले दो वर्षों के दौरान उन्होंने कुलाना के साथ ही मातनहेल और पटौदी के राजकीय महाविद्यालयों का अतिरिक्त कार्यभार भी बखूबी संभाला। बहादुरगढ़ कॉलेज में प्राचार्य का पदभार संभालने पर पूरे महाविद्यालय स्टॉफ ने उनका स्वागत किया और उज्जवल भविष्य की कामना की। प्राचार्य दलबीर सिंह ने महाविद्यालय की उन्नति और विकास के लिए सभी से सहयोग करने का अनुरोध किया। इस मौके पर उप प्राचार्या सुमन हुड्डा समेत सभी स्टाफ सदस्यों ने कॉलेज के संचालन में उन्हें हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया।

झज्जर। सेक्टर 6 के पार्क में तीज महोत्सव को लेकर लगाया टेंट। फोटो :हरिभूमि

बहादुरगढ़। निलोठी में सरपंच शर्मिला को स्मृति चिह्न भेंट करती बीके अंजलि दीदी।

निलोठी में मनाया गया रक्षाबंधन

बहादुरगढ़। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा निलोठी गांव में रक्षाबंधन पर्व आध्यात्मिक उल्लास और सांस्कृतिक गरिमा के साथ धूमधाम से मनाया गया। सरपंच शर्मिला ओमप्रकाश दहिया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। बीके अंजलि दीदी ने रक्षाबंधन के आध्यात्मिक रहस्य पर प्रकाश डाला।

उद्यमियों को अपने कार्यस्थलों पर सभी सुरक्षा नियमों और विनियमों का पालन करने की सलाह दी

बैठक में फायर एवं सेफ्टी से संबंधित मुद्दों पर हुई चर्चा

■ बैठक में आग से बचाव के उपायों, आपातकालीन योजनाओं और सुरक्षा नियमों के बारे में जानकारी दी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शहर के आधुनिक औद्योगिक संपदा (एमआईई) में स्थित बहादुरगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (बीसीसीआई) भवन में फायर एवं सेफ्टी विभाग के अधिकारियों ने उद्यमियों के साथ संवाद किया। उद्यमियों को अपने कार्यस्थलों पर सभी सुरक्षा नियमों और विनियमों का पालन करने की सलाह दी गई। फायर एंड सेफ्टी विभाग के संयुक्त निदेशक गुलशन कुमार, सहायक मंडलीय अग्निशमन अधिकारी सज्जन कुमार, फायर स्टेशन अधिकारी दीपांशु मेहलावत उद्योगपतियों से रूबरू हुए। इस बैठक में आग से बचाव के उपायों, आपातकालीन योजनाओं और सुरक्षा नियमों के बारे में जानकारी दी गई। बैठक का मुख्य उद्देश्य उद्यमियों को आग लगने की स्थिति में सतर्क रहने और आवश्यक कदम उठाने के लिए जागरूक करना था। बीसीसीआई अध्यक्ष सुभाष जग्गा ने बताया कि बैठक में आग से सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया गया और उद्यमियों को अपने कार्यस्थलों पर सुरक्षा मानकों का पालन करने की सलाह दी गई। अधिकारियों ने आग लगने से रोकने के लिए स्मॉक डिटेक्टर, अग्निशामक यंत्रों का सही इस्तेमाल और आपातकालीन निकास मार्गों की उपलब्धता सुनिश्चित करने जैसे आवश्यक उपाय करने की हिदायत दी। आग से सुरक्षा के बारे में कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने का महत्व समझाया। फायर सेफ्टी सर्टिफिकेट समेत अन्य आवश्यक नियमों की जानकारी दी गई। बैठक में वरिष्ठ उपाध्यक्ष नरेंद्र छिकारा, विकास आनंद सोनी, पवन जैन, केके सेठ, अजय खट्टर, विनोद जैन, वीके जैन आदि उद्यमियों ने आग से सुरक्षा के उपायों को गंभीरता से लेने और अपने कार्यस्थलों पर सुरक्षा मानकों को बेहतर बनाने का संकल्प लिया।

बहादुरगढ़। बैठक में फायर एंड सेफ्टी विभाग के अधिकारियों का स्वागत करते उद्यमी। फोटो :हरिभूमि

खबर संक्षेप

झज्जर। प्रतियोगिता के दौरान उपस्थित भैंस एवं पशुपालक। फोटो: हरिभूमि

दूध प्रतियोगिता में नवीन की भैंस रही प्रथम

झज्जर। क्षेत्र के गांव सिवाना स्थित राजकीय पशु चिकित्सालय में दो दिवसीय दूध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 21 किलो 700 ग्राम दूध देकर पशुपालक नवीन की भैंस ने पहला स्थान प्राप्त किया। पशु चिकित्सक दलबीर सिंह ने बताया कि दूध उत्पादन को बढ़ावा देने और किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार द्वारा समय-समय पर इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया जाता है। कार्यक्रम में डॉक्टर दलबीर सिंह ने पशुपालकों को प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न लाभकारी योजनाओं से अवगत कराते हुए आह्वान किया कि वे पशु बीमा, पशु नस्ल सुधार के लिए कृत्रिम गर्भाधान और संक्रमणकारी बीमारियों जैसे मुंहखुर, गलघोंटू आदि से बचाव के लिए समय-समय पर अपने पशुओं टीकाकरण कराएं।

पूर्व विधायक जून ने दी शहीदों को श्रद्धांजलि

बहादुरगढ़। पूर्व विधायक राजेंद्र सिंह जून ने कारगिल विजय दिवस पर शहीद वीर सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की। जून ने कहा कि हमारे वीर जवानों ने अपने अदम्य शौर्य, साहस व पराक्रम से सदैव दुश्मनों को कड़ा सबक सिखाते हुए युद्ध में धूल चटाई है। पूर्व विधायक ने वीर शहीदों को नमन करते हुए कहा कि राष्ट्र सदा वीर शहीदों का ऋणी रहेगा।

नीना राठी ने किया शहीदों को नमन

बहादुरगढ़। नगर पार्षद एडवोकेट डा. नीना सतपाल राठी ने कारगिल विजय दिवस पर तिरंगे की आन बान शान के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर जाबांजों की शहादत को नमन किया। उन्होंने कहा कि इस युद्ध में झज्जर जिले के 11 वीर सैनिकों ने भी देश की रक्षा करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था। ऐसे जाबांज सैनिकों की शहादत से युवा पीढ़ी को देश भक्ति के प्रति प्रेरणा मिलती रहेगी।

पंकज जैन ने किया शहीदों को याद

बहादुरगढ़। भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ पंकज जैन ने कारगिल विजय दिवस पर वीर शहीदों को नमन किया। उन्होंने भारतीय सेना के शौर्य व साहस को सलाम करते हुए कहा कि भारत की सेना के पराक्रम का पूरी दुनिया लोहा मानती है। पूरा देश आजादी के अमृत महोत्सव में स्वतंत्रता सेनानियों, शहीद सैनिकों व अमर वीरों को याद कर रहा है।

बढ़ता प्रदूषण कर रहा लोगों को बीमार

प्रदूषण का असर श्वसन तंत्र के साथ ही दिल की सेहत को भी करता है प्रभावित

- प्रदूषण रोकने के लिए किए जा रहे तमाम प्रयास निष्प्रभावी सिद्ध हो रहे हैं
- एक तरफ एमआईई और दूसरी तरफ एचएसआईआईडीसी के सेक्टर-16/17 और सूर्या नगर आदि इलाकों में स्थित फैक्ट्रियों से धुआं उठ रहा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। शुक्रवार रात को ओमेक्स के निकट आसमान में छाया औद्योगिक धुआं।

वायु प्रदूषण के चलते औद्योगिक नगरी बहादुरगढ़ के निवासी बीमार हो रहे हैं और चिकित्सकों के चक्कर लगा रहे हैं। देश की राजधानी दिल्ली से सटे बहादुरगढ़ में एक तरफ जहां औद्योगिक प्रदूषण आमजन की सांसों पर भारी पड़ रहा है। वहीं कूड़ा जलाने के साथ ही प्लास्टिक कबाड़ से भी प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ रहा है। चिंताजनक स्थिति यह कि इसे रोकने के लिए किए जा रहे तमाम प्रयास निष्प्रभावी सिद्ध हो रहे हैं। वायु प्रदूषण हमारे जीवन का एक अनदेखा और गंभीर संकट बन चुका है। बढ़ते प्रदूषण के कारण न केवल हमारी श्वसन प्रणाली बल्कि दिल से जुड़ी समस्याएं भी बढ़ रही हैं। वायु प्रदूषण को अक्सर "साइलेंट किलर" कहा जाता है, क्योंकि प्रदूषण के जहरीले कण धीरे-धीरे हमारे शरीर को नुकसान पहुंचा रहे हैं। जिन लोगों का इम्यून सिस्टम कमजोर है या जिनमें पहले से कोई स्वास्थ्य समस्या है, उन्हें ज्यादा दिक्कत हो रही है। इस बढ़ती समस्या के कारण सांस और दिल की बीमारियां तेजी से फैल रही हैं, जो एक खतरनाक स्थिति बनती जा रही है। वायु प्रदूषण बढ़ने से दिन-प्रतिदिन बहादुरगढ़ की हवा दमघोंटू हो रही है, लेकिन इसके बावजूद प्रदूषण को रोकने के लिए तमाम सरकारी विभागों द्वारा पर्याप्त इंतजाम नहीं किए जा रहे हैं। औद्योगिक क्षेत्र के साथ ही बाइपास पर सड़क किनारे जगह-जगह पड़े इंडस्ट्रियल वेस्ट और सॉलिड वेस्ट के ढेरों को देखकर लगता है कि प्रशासन सक्रिय रूप से काम नहीं कर रहा है। हालांकि हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा नगर परिषद, पंचायत विकास विभाग और एचएसआईआईडीसी समेत सभी जिम्मेदार विभागों को सार्वजनिक स्थानों पर पड़े वेस्ट का नियमानुसार उचित निष्पादन करने की चेतावनी दी गई है। सड़क किनारे उड़ने वाली धूल ने भी प्रदूषण के साथ-साथ लोगों की स्वास्थ्य संबंधी परेशानी में इजाफा किया है। रात में एक तरफ एमआईई और दूसरी तरफ एचएसआईआईडीसी के सेक्टर-16/17 और सूर्या नगर आदि इलाकों में स्थित फैक्ट्रियों से धुआं उठता रहता है। जिसके कारण लोगों को आंखों में जलन व सांस लेने में दिक्कत व त्वचा रोगों का सामना करना पड़ रहा है। यह समस्या केवल व्यक्तिगत प्रयासों से हल नहीं हो सकती। हमें सामूहिक प्रयास और जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है, ताकि हम सब मिलकर इस समस्या से निपट सकें। स्थानीय निवासी निशांत राठी ने बताया कि औद्योगिक इलाकों में वातावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए खास कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। फैक्ट्रियों की चिमनी से निकलने वाले धुएं के कारण यहां रहने वालों को दिक्कत हो रही है। शहर के रेलवे पार्क के सामने कूड़ा-कचरा फैला रहता है। सेक्टर-7 के निकट कूड़े के ढेर में बेसहारा पशु मुंह मारते रहते हैं। स्थानीय निवासी सुरेंद्र चौहान ने बताया कि स्वास्थ्य संबंधी परेशानी से बचने के लिए मुंह और नाक को ढककर चलते हैं। सरकार को प्रदूषण कम करने के लिए सख्त कदम उठाने होंगे।

बोर्ड सक्रिय : अरोड़ा

प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी शैलेंद्र अरोड़ा का कहना है कि प्रदूषण की रोकथाम के लिए बोर्ड सक्रिय है। जगह-जगह निरीक्षण कर संबंधित विभागों को नोटिस जारी किए गए हैं। सॉलिड और प्लास्टिक वेस्ट के निस्तारण की हिदायत दी जा रही है।

बीमारियों का खतरा : डॉ. मिश्रा

डॉ. बीएन मिश्रा के अनुसार वायु प्रदूषण श्वसन तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। प्रदूषण के कण श्वसन मार्ग में घुसकर अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी बीमारियां पैदा करते हैं। इसके साथ ही प्रदूषण के कारण हार्ट अटैक, हाई ब्लड प्रेशर और स्ट्रोक जैसी समस्याएं भी बढ़ रही हैं। प्रदूषण से बचाव के लिए विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर आहार लें। ये शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है।

बहादुरगढ़। विजेता खिलाड़ियों का स्वागत करते कपूर राठी व अन्य।

जम्मू कश्मीर से जीतकर लौटे खिलाड़ियों का किया स्वागत

तिजेंद्र राठी व अमित चौधरी रहे प्रथम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

- बेंच प्रेस एवं डेड लिफ्ट पावर लिफ्टिंग में जमाया रंग

जम्मू कश्मीर में नचुरल स्ट्रॉन्ग पावर लिफ्टिंग फेडरेशन द्वारा जन्नत-ए-कश्मीर बेंच प्रेस एवं डेड लिफ्ट पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप आयोजित की गई। इसमें बहादुरगढ़ के चार खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीते। इन सभी का शनिवार को इनेलो कार्यालय में स्वागत किया गया। प्रतियोगिता के डेड लिफ्ट वर्गों में तिजेंद्र राठी ने 170 किलोग्राम व अमित चौधरी ने 150 किलोग्राम भार उठाकर प्रथम स्थान हासिल किया। जबकि बेंच प्रेस में अमित अंतिल व विनीत दहिया ने भी 120 किलोग्राम भारवर्ग में पहला स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक हासिल किए। सभी विजेता खिलाड़ियों का इनेलो कार्यालय में कपूर सिंह राठी व अन्य कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। उन्होंने कहा कि युवाओं को नशे से दूर रहकर खेलों की ओर ध्यान देना चाहिए। रामनिवास सैनी, भगते पहलवान, पार्षद बिजेंद्र दलाल, राज सिंह वर्मा, मास्टर सुखबीर सरोहा, कंवल सिंह यादव, अनिल मदान, ओमप्रकाश डोरा, पूर्व पार्षद शशि, प्रमोद कौशिक, अरुण आसीवाल, अरविंद, मनीष सेठी, विनय राणा, भगत सिंह, अजीत दलाल, जय सिंह मलिक व देवराज गंभीर आदि ने विजेताओं को बधाई दी।

बहादुरगढ़। नई पाइपलाइन डालने के कार्य का निरीक्षण करती चेयरपर्सन सरोज राठी व अन्य। फोटो: हरिभूमि

महावीर पार्क में जलभराव के स्थाई समाधान का किया दावा

बहादुरगढ़। नगर परिषद द्वारा महावीर पार्क की वर्षों पुरानी जलभराव की समस्या का समाधान करने के लिए पाइपलाइन डालकर दिल्ली रोहतक रोड स्थित नाले से जोड़ा जा रहा है। इसका निरीक्षण करते हुए चेयरपर्सन सरोज राठी ने दावा किया कि इसके साथ ही यहां जलभराव की समस्या का स्थाई समाधान हो जाएगा। यह काम पूरा होने के बाद वार्ड नंबर 22 व 28 के निवासियों को जलभराव से राहत मिलेगी। इस काम पर नप द्वारा 22 लाख रुपए खर्च किए जा रहे हैं। इस अवसर पर पार्षद प्रवीन कुमार, पार्षद ज्योति पवन रोहिल्ला, रमेश राठी, भाजपा जिला उपाध्यक्ष नरेश भारद्वाज, विनोद कुमार, मनमोहित गुप्ता, केशव व मनोज आदि मौजूद रहे।

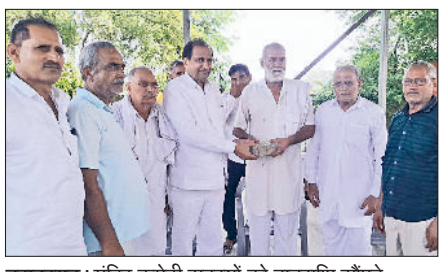

बहादुरगढ़। मंदिर कमेटी सदस्यों को दानराशि सौंपते अशोक गुप्ता। फोटो: हरिभूमि

पूर्व चेयरमैन अशोक गुप्ता ने शिव मंदिर में दिए 5 लाख

बहादुरगढ़। गांव डाबोदा कलां के शिव मंदिर में हुए कार्यक्रम में शिरकत करते हुए पूर्व चेयरमैन अशोक गुप्ता ने 5 लाख रुपए का दान दिया। वे पहले भी इस मंदिर में कई बार सहयोग कर चुके हैं। इस मौके पर मौजूद मंदिर कमेटी सदस्य उमेद सिंह, पूर्व प्रधान सतपाल, ऋषिपाल, रामबीर, चरण सिंह, धनराज, सतीश, रामकंवार, धर्मवीर, महेंद्र, जयभगवान, सतबीर व जितेंद्र आदि ने अशोक गुप्ता का आभार जताया।

भाविप ने परिवार मिलन के साथ मनाया तीज उत्सव

- 90 वर्षीय सोना देवी ने कलाकारों को किया सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। भाविप के परिवार मिलन समारोह में प्रस्तुति देते कलाकार।

भारत विकास परिषद की विवेकानंद शाखा द्वारा हरियाली तीज पर महेश्वरी भवन में परिवार मिलन समारोह का आयोजन किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में नगर परिषद चेयरपर्सन सरोज राठी और अति विशिष्ट अतिथि के रूप में बीसीसीआई सचिव पवन जैन ने शिरकत की। भाविप के प्रांतीय महासचिव दीपक जिंदल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। नृत्यांगना अकादमी की बालिकाओं द्वारा कृष्ण लीला प्रस्तुत की गई। परिषद परिवार के बच्चों द्वारा भजन, नृत्य, देशभक्ति गीत व हरियाणवीं गीत प्रस्तुत किए गए। प्रांतीय उपाध्यक्ष मूलचंद जोशी, जिला समन्वयक सतीश शर्मा और सह समन्वयक प्रवीण शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति में मंच संचालन शाखा सचिव नीरज गर्ग ने किया चेयरपर्सन सरोज राठी ने हरियाली तीज के महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि यह पर्व प्रकृति के प्रति प्रेम और सम्मान व्यक्त करने का अवसर है।

दीपक जिंदल ने कहा कि भाविप के ये कार्यक्रम सदस्यों को एक दूसरे के करीब लाने और परिषद के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करते हैं। पवन जैन और सतीश शर्मा ने परिषद के उद्देश्यों के बारे मं बताया। शाखा अध्यक्ष मुरारीलाल गोयल ने सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

करीब 90 वर्षीय सोना देवी ने सांस्कृतिक प्रस्तुति देने वाले प्रतिभागियों और शिक्षिका मानसी खुराना को अपनी तरफ से पुरस्कृत किया। साथ ही सुनील बंसल की टीम से राहुल सिंघल, सोना बंसल, मीना मित्तल, चंचल गर्ग और सुनीता जैन को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में रामफल सिंगला, संजय गर्ग, सौरभ, अशोक गोयल, राजबीर बंसल, संदीप गोयल, गजानंद गर्ग, पूजा सिंघल, विनोद शर्मा और सुधीर का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर रमेश गुप्ता, विजय पुन्हानी, एमएस भाटी, विरेंद्र कौशिक, सुभदा घरोटे आदि उपस्थित रहे।

झज्जर। स्कूल परिसर में पौधारोपण करते हुए विद्यार्थी एवं शिक्षक।

- प्राचार्या किरण मुदगिल ने जहां विद्यार्थियों को तीज पर्व के महत्व से अवगत कराया

पौधरोपण के साथ मनाया तीज महोत्सव

झज्जर। ब्राइट कैरियर सीनियर सैकेंडरी स्कूल रईया में हरियाली तीज महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्कूल में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा पौधरोपण भी किया गया। प्राचार्या किरण मुदगिल ने जहां विद्यार्थियों को तीज पर्व के महत्व से अवगत कराया वहीं उनमें पौधे वितरित करते हुए कहा कि वृक्ष हमारे जीवन का आधार है। पर्यावरण संरक्षण आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है और वृक्षारोपण इसका सबसे सरल व प्रभावी तरीका है। कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों व शिक्षकों ने स्कूल परिसर में भी पौधारोपण किया

कन्या गुरुकुल में मनाया वन महोत्सव

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

शनिवार को कन्या गुरुकुल लोवा कलां में वन महोत्सव मनाया गया। आर्य अशोक जून के सानिध्य में गुरुकुल की प्रमुख आचार्या डॉ. राजन मान, आचार्या विद्यावती, आचार्या प्रीति व अनु के अलावा केंद्रीय आर्य सभा की ओर से मास्टर रामचंद्र रुहिल, हरस्वरुप रुहिल, राजेश राठी, बिजेंद्र खोखर आदि ने अपने परिवारों के साथ भाग लिया। आर्य समाज जिला झज्जर के प्रधान आर्य हरिओउ्म दलाल ने बताया कि कार्यक्रम में गुरुकुल की अनेक छात्राओं ने पर्यावरण, जल संरक्षण और वनों के महत्व पर अपने विचार रखे।

बहादुरगढ़। लोवा कलां गुरुकुल में पौधरोपण करती कन्याएं व आर्य समाजी।

झज्जर। बैठक के उपरांत उपस्थित एसोसिएशन सदस्य एवं पदाधिकारी। फोटो: हरिभूमि

जिला योगासन स्पोर्ट्स चैंपियनशिप तीन अगस्त को बेरी में : डॉ: मानव

झज्जर। डिस्ट्रिक्ट योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा आगामी तीन को बेरी में पांचवीं जिला स्तरीय योगासन स्पोर्ट्स चैंपियनशिप का आयोजन किया जाएगा। एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष डॉक्टर मदन मानव ने बताया कि हरियाणा योग आयोग के चेयरमैन डॉक्टर जयदीप आर्य के निर्देशानुसार प्रत्येक जिले में जिला स्तरीय योगासन प्रतियोगिता कराई जा रही हैं। इस संबंध में शनिवार को जिला आयुष अधिकारी कार्यालय में बैठक आयोजित कर योगसन प्रतियोगिता कराने का यह निर्णय लिया गया। यह चैंपियनशिप दयाराम तिगड़ानिया सरस्वती विद्या मंदिर में कराई जाएगी। इसके लिए हरमेश को चैंपियनशिप का डायरेक्टर व नीलम को मैनेजर बनाया गया है। डायरेक्टर हरमेश ने बताया कि अबकी बार प्रतियोगिता में कुछ नियम बदले गए हैं। इनमें यह चैंपियनशिप ओपन होगी, इसमें 10 वर्ष से लेकर 55 वर्ष आयु वर्ग महिला एवं पुरुष खिलाड़ी भाग ले सकेंगे। प्रतियोगिता में चार इवेंट न होकर 10 इवेंट होंगे, जिसमे ट्रेडिशनल, फॉरवर्ड बेंडिंग, बैक बेंडिंग, ट्विस्टिंग बॉडी, हेंडस्टैंड, लेग बैलेंस सहित अन्य मुकाबले होंगे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

जलभराव की समस्या को लेकर डीसी कैंप ऑफिस पहुंचे नीमवाली कॉलोनी निवासी

लोग बोले- कॉलोनी में बाढ़ जैसे हालात, जीना मुश्किल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

झज्जर। डीसी कैंप ऑफिस के बाहर शिकायत पत्र के साथ नीमवाली कालोनीवासी। फोटो: हरिभूमि

जल भराव के कारण परेशानी का सामना करने कर रहे नीमवाली कालोनी निवासी शनिवार को अपनी शिकायत लेकर डीसी कार्यालय पहुंचे। ट्रैक्टर-ट्राली में बैठकर आए कालोनी वासियों ने डीसी के कैंप ऑफिसर पहुंच कर यहां अपना शिकायत पत्र सौंपा। कालोनीवासियों ने शिकायत में कहा है कि उनके क्षेत्र में हर मानसून में जलभराव की समस्या रहती है। इस वर्ष स्थिति अधिक गंभीर बनी है जिस कारण स्वास्थ्य व सुरक्षा का खतरा पैदा हो गया है। बीती 23 जुलाई को हुई बरसात के बाद उनके क्षेत्र में बाढ़ जैसे हालात पैदा हो गए हैं। हालांकि नगर परिषद द्वारा पानी निकासी के लिए दो पंपसेट लगाए गए हैं लेकिन सुचारू रूप से कार्य न होने के चलते आज तक बरसाती पानी नहीं निकल पाई। जलभराव के कारण सड़क के गड्ढे दिखाई न देने के कारण यहां कई बार राहगीर भी चोटिल हो चुके है। अधिक जलभराव के कारण बरसाती पानी घरों में भी घुस गया है। जिस कारण जहां उनके मकानों में दरारें आ गई हैं वहीं घरेलू सामान भी क्षतिग्रस्त हो चुका है। ऐसे में दीवारें गिरने का भी खतरा भी बना है। इसलिए वे चाहते हैं कि मौका मुआयना कर उन्हें जलभराव की समस्या से निजात दिलाई जाए।

पेयजल आपूर्ति भी हो रही प्रभावित

कालोनी वासी एडवोकेट ऋचा शर्मा, किरण शर्मा, सज्ञानपाल, भावना, नरेश राणा, संजू देवी, संतोष वर्मा, नानकचंद, हंसराज, सतीश, जगदीश चंद्र, सौरभ, अशोक कुमार, वीरेंद्र, सुनील, नवीन, दीपक आदि ने बताया कि बरसाती पानी के कारण उनके घरों में आने वाली पेयजल सप्लाई भी बाधित हो रही है। लीकेज या अन्य कारणों से दूषित पानी नलों में सप्लाई हो रहा है जो पीने योग्य नहीं है। नियमित जलभराव के कारण डेंगू, मलेरिया जैसी जलजनित बीमारियों के संक्रमण का खतरा भी बना है। कालोनीवासियों के अनुसार पानी निकासी के लिए लगाए गए दो पंप सेट केवल दिन में चलाए जाते हैं जिस कारण पानी निकासी शीघ्र नहीं हो पा रही। पानी निकासी के लिए या तो पंप सेट की संख्या बढ़ाई जाए या फिर उन्हें चौबीसों घंटे चलाया जाए।

झज्जर। नागरिक अस्पताल परिसर में पोस्टमार्टम के लिए कागजी कार्रवाई करते हुए पुलिसकर्मी।

सड़क दुर्घटना में एक की मौत, दो घायल

झज्जर। शहर के कोसली रोड स्थित फ्लाईओवर पर हुई सड़क दुर्घटना में मोटरसाइकिल सवार एक युवक की मौत हो गई जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। मृतक की पहचान क्षेत्र के गांव कुंजैया निवासी प्रदीप पुत्र जयनारायण के तौर पर हुई है। प्रदीप दिहाड़ी मजदूरी का कार्य करता था। शनिवार की सुबह करीब नौ बजे वह अपने गांव के साथी विपिन की मोटरसाइकिल पर शहर आ रहा था। उनकी मोटरसाइकिल पर एक अन्य युवक भी साथ था। जब वे कोसली रोड स्थित फ्लाईओवर पर पहुंचे तो मोटरसाइकिल की गति तेज होने के कारण संतुलन बिगड़ गया और वे तीनों मोटरसाइकिल सहित सड़क पर जा गिरे। तीनों को गंभीर हालत में उपचार के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों ने प्रदीप को मृत घोषित कर दिया जबकि दो अन्य युवकों को गंभीर हालत के चलते प्राथमिक उपचार के बाद पीजीआई रैफर कर दिया। मामले के जांच अधिकारी अजीत सिंह ने बताया कि इस संबंध में मृतक के पुत्र संदीप की शिकायत पर मोटरसाइकिल चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। पुलिस द्वारा इस संबंध में नियमानुसार आगामी कार्रवाई अमल में लाई जा रही है।

SHRI BALAJI INSTITUTE OF PARA MEDICAL SCIENCE
सभी सरकारी सेवा में मान्य
आंगनबाड़ी सुपरवाईजर / सहायक / कार्यकर्ता
PHYSICIAN ASSISTANT
MULTI PURPOSE HEALTH WORKER
HEALTH SANITARY INSPECTOR
AYURVEDIC PHARMACY (DAP)
DENTAL HYGIENIST / MACHENIC
C.M.S. & ED / FIRST AID
MEDICAL LAB/ X-RAY TECH.
OPRATION THEATORE TECH.
OPTHALMIC ASSISTANT (DOA)
COMMUNITY HEALTH/EMT
FOOD SAFETY / VETERNARY INSPECTOR
PLASTER, DRESSER, NTT, PT, CTT
BAMS (ALT), BEMS (EH)
Dr. S.K. Saini (Director)
41/29, चाणक्य पुरी, शीला सिनेमा के पीछे, रोहतक-124001
9254233221

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 27 जुलाई 2025

बुलेट ट्रेन के बाद अब आ रहा

हाइएस्ट स्पीड वाला बुलेट इंटरनेट

करीब साठ साल पहले दुनिया की पहली बुलेट ट्रेन बनाने वाले देश जापान ने अब बुलेट स्पीड वाले इंटरनेट को बनाने में सफलता हासिल की है। इस नई तकनीक से अविश्वसनीय तेज गति से डाटा ट्रांसफर हो सकेगा। इस नई तकनीक की क्या हैं विशेषताएं, इससे क्या होंगे भविष्य में फायदे, इनके बारे में आप भी डिटेल में जरूर जानना चाहेंगे।

{ कवर स्टोरी/ सुनील कुमार महला }

हाल ही में जापान के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशंस टेक्नोलॉजी (एनआईसीटी) के रिसर्चर्स ने 1.02 पेटाबिट्स प्रति सेकेंड की अविश्वसनीय इंटरनेट स्पीड हासिल करके विश्व रिकॉर्ड कायम किया है। जापान के एनआईसीटी ने सुमितोमो इलेक्ट्रिक और यूरोपीय पार्टनर के साथ मिलकर यह उपलब्धि हासिल की है। उनके यूनिक 19 कोर ऑप्टिकल फाइबर केबल ने अविश्वसनीय स्पीड से डाटा ट्रांसमिट किया।

अविश्वसनीय है इसकी स्पीड

एक रिपोर्ट के अनुसार, नई तकनीक के द्वारा 1.02 मिलियन गीगाबाइट (जीबी) डाटा एक सेकेंड में डाउनलोड किया गया। यह स्पीड इतनी ज्यादा है कि इसके बारे में सोच पाना भी मुश्किल है। जापान की इस तकनीक को वैश्विक रूप से डाटा ट्रांसफर, स्ट्रीमिंग और कनेक्टिविटी के क्षेत्र में एक उज्ज्वल भविष्य के रूप में देखा जा रहा है। बताते चलें कि जापान की इस लेटेस्ट इंटरनेट नेटवर्क की स्पीड 1.02 पेटाबिट्स प्रति सेकेंड है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह करीब 10 लाख जीबी प्रति सेकेंड के बराबर है। यह इंटरनेट स्पीड इतनी फास्ट है कि इस स्पीड का इस्तेमाल करके कुछ ही सेकेंड्स में फिल्म ही नहीं, बल्कि पूरी की पूरी लाइब्रेरी तक डाउनलोड की जा सकती है। वास्तव में जापान की यह उपलब्धि डेटा ट्रांसमिशन तकनीक में एक महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी कदम है। जापान की यह स्पीड अमेरिका की वर्तमान इंटरनेट डाटा एवरेज इंटरनेट स्पीड से 3.5 मिलियन गुना अधिक है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह स्पीड अमेरिका के औसत इंटरनेट कनेक्शन से 35 लाख गुना ज्यादा है। भारत की औसत इंटरनेट गति से यह 1.6 करोड़ गुना तेज बताई जा रही है। रिसर्चर्स के अनुसार इतनी स्पीड से एक साथ 1 करोड़ 8 हजार वीडियो स्ट्रीम किए जा सकते हैं। यानी 10 लाख जीबी प्रति सेकेंड के हिसाब से यह स्पीड मिलेगी, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। जापान द्वारा हाइ स्पीड इंटरनेट तकनीक का विकास, आने वाले समय में 6जी नेटवर्क, क्लाउड सिस्टम्स, अंडरसी डेटा केबल्स और एआई जैसे उभरते क्षेत्रों में नई क्रांति लेकर आएगा।

नई तकनीक का किया इस्तेमाल

जापान ने सिंगल कोर के बजाय 19 कोर ऑप्टिकल फाइबर सिस्टम और उन्नत एंप्लीफायर तकनीक की मदद से इतनी तेज इंटरनेट स्पीड को हासिल करने में सफलता हासिल की है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इन स्पेशल केबल का इस्तेमाल कर शोधकर्ताओं की टीम ने बिना किसी स्पीड लॉस के 1800 किलोमीटर से भी अधिक की दूरी तक भारी मात्रा में डेटा भेजने में सफलता पाई। उन्होंने ट्रांसमीटर, रिसीवर और लूपिंग सर्किट के सेटअप का उपयोग किया, जिससे डेटा फुल पॉवर से फ्लो रखने में मदद मिली। इस ऐतिहासिक उपलब्धि का अर्थ है कि एक सेकेंड में 10,000 से अधिक फिल्में डाउनलोड की जा सकती हैं। गौरतलब है कि मार्च 2024 में भी जापान ने ही 402 टेराबिट्स प्रति सेकेंड (यानी 50,250 जीबीपीएस) की स्पीड का रिकॉर्ड बनाया था। लेकिन इस बार नई तकनीक ने इस आंकड़े को दोगुना से अधिक कर दिया।

कई सेक्टर्स को मिलेगा लाभ

कहना गलत नहीं होगा कि जैसे-जैसे एआइ, 8के स्ट्रीमिंग, क्लाउड गेमिंग और ऑगमेंटेड रियलिटी जैसे सेक्टर आगे बढ़ेंगे, ऐसे ब्रेकथ्रू तकनीकों की जरूरत और भी बढ़ेगी। वास्तव में यह तकनीक कृत्रिम बुद्धिमत्ता, एआइ, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, आइओटी और ग्लोबल डिजिटलीकरण की बढ़ती मांगों को पूरा करने में मदद करेगी। ज्यादा तेज इंटरनेट, ज्यादा तेज विकास भी लेकर आएगा। स्मार्ट सिटी, रिमोट हेल्थ केयर और ऑनलाइन शिक्षा जैसे क्षेत्रों में बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा।

जापान ने सिद्ध की श्रेष्ठता

बताते चलें कि दुबई, इंटरनेट की स्पीड के मामले में दुनिया में दूसरे नंबर पर, हॉन्ग कॉन्ग तीसरे नंबर पर, फ्रांस चौथे नंबर पर और आइसलैंड पांचवें नंबर पर आता है। कहना गलत नहीं होगा कि जापान ने अपने तकनीकी नवाचार से ग्लोबल डिजिटल डिफरेंस को भी उजागर किया है। आज एआइ का दौर है। दुनिया में ज्यादातर काम-काज इंटरनेट तकनीक से किए जा रहे हैं। आने वाले समय में इंटरनेट और तकनीक का उपयोग निश्चित ही अधिक बढ़ेगा। ऐसे में जापान की इंटरनेट स्पीड से जापान के साथ ही साथ दुनिया के अन्य देशों को भी इसके लाभ मिल सकेंगे। आने वाले समय में एआई, 6जी नेटवर्क, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और वर्चुअल रियलिटी जैसी उभरती तकनीकों के लिए अत्यधिक डाटा ट्रांसमिशन की जरूरत होगी। जापान की यह तकनीक इन जरूरतों को पूरा करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। हालांकि यह तकनीक अभी प्रयोगशाला तक ही सीमित है और इसे आम उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराए जाने में वक्त लगेगा। लेकिन भविष्य की इंटरनेट कनेक्टिविटी के लिहाज से यह एक मजबूत नींव तो रखती ही है।

हमें भी करने होंगे प्रयास

जापान की यह उपलब्धि हमें भी अपनी इंटरनेट गति को बढ़ाने की जरूरत की याद दिलाती है। गौरतलब है कि इंटरनेट की स्पीड के मामले में भारत टॉप 10 देशों में भी शामिल नहीं है। यहां पर मोबाइल इंटरनेट स्पीड 100.78 एमबीपीएस है, जबकि एवरेज ब्रॉडबैंड स्पीड 63.55 एमबीपीएस है। वास्तव में यह स्पीड विश्व के बाकी देशों के मुकाबले काफी कम है। आज भी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में उतनी इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं है, जितनी होनी चाहिए। आज भी भारतीय ग्रामीण और दूर-दराज के क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी और 5जी नेटवर्क का विस्तार काफी चुनौतियों से भरा है। आज भारत लगातार डिजिटाइजेशन की ओर बढ़ रहा है। इंटरनेट ही शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और आर्थिक विकास के लिए नए अवसर खोल सकता है। इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ने से अनेक प्रकार के अवसर देश में पैदा होंगे। इंटरनेट स्पीड बढ़ेगी तो डिजिटल इंडिया को गति मिलेगी और डिजिटल इंडिया से रोजगार के अवसर बढ़ने, अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने और बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण होगा। इसके लिए आज जरूरत इस बात की है कि हम अपने देश के डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश बढ़ाएं। *

यंगस्टर्स को सर्वाधिक अट्रैक्ट करते हैं

देश के टॉप करियर मैगनेट सिटीज

प्राइवेट सेक्टर में अगर देश के टॉप करियर मैग्नेट सिटीज की बात करें तो बेंगलुरु, हैदराबाद और चेन्नई सबसे आगे हैं। इनके अलावा कुछ और शहर भी आगे बढ़ रहे हैं। वर्तमान समय और भविष्य के जॉब के लिहाज से हॉट सिटीज पर एक नजर।

{ जॉब ट्रेंड / कीर्तिशेखर }

करियर और लगातार ग्रोथ करने के लिहाज से इस समय भारत का सबसे अच्छा शहर बेंगलुरु को माना जाता है। सैलरी के मामले में भी इस समय देश के टॉप पांच शहरों में सबसे पहला नंबर बेंगलुरु का ही है और आने वाले अगले पांच सालों तक बेंगलुरु, हैदराबाद, मुंबई, अहमदाबाद, पुणे, चेन्नई और गुरुग्राम यही टॉप करियर शहर होंगे। अगले पांच सालों तक भी भारत के इन्हीं शहरों में सबसे अच्छा भविष्य तलाशने वाले युवक आकर्षित होंगे।

हाई सैलरी देने वाले शहर: 'जॉब्स एंड सैलेरीज प्राइमर फाइनेंशियल ईयर-2024' टीम लीज के हिसाब से बेंगलुरु शहर में औसत समग्र मासिक वेतन 29,500 रुपए है, जो कि देश के बाकी सभी महानगरों के मुकाबले 8 से 15 फीसदी ज्यादा है। इस मामले में एक अखबार ने भी हाल के दिनों में सैलरी और करियर के भविष्य के लिहाज से एक सर्वे किया, रेस फॉर टैलेंट। इस सर्वे में भी बेंगलुरु जूनियर, मिड और सीनियर यानी तीनों ही वेतन श्रेणियों में क्रमशः रुपए 7.2 लाख, रुपए 20.4 लाख और रुपए 37.2 लाख के औसत से शेष सभी भारतीय शहरों में शीर्ष पर है। रैंडस्टैड 2025 रिपोर्ट बताती है कि यहां जूनियर भूमिकाओं का सैलरी पैकेज देश के दूसरे सभी बड़े शहरों के मुकाबले 23 पर्सेंट तक ज्यादा है और मिड लेबल में यह 9 फीसदी ज्यादा है।

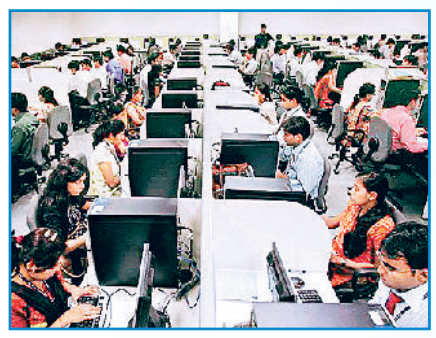

ये सिटीज भी बढ़ रहे हैं आगे: एक नए सर्वे (इनडीड) के मुताबिक यह बात भी सामने आ रही है कि हैदराबाद और चेन्नई भी बहुत तेजी से अगले पांच सालों में सैलरी देने के मामले में देश के टॉप शहर बनने का मुकाबला करेंगे। लेकिन अभी तक ज्यादातर अनुमान यही है कि 2030 तक यह सेहरा बेंगलुरु के सिर पर ही रहेगा। हैदराबाद और चेन्नई के बाद जो तीसरा शहर इस मामले में चौंकाने वाली रफ्तार से, विशेषकर सैलरी के मामले में आगे बढ़कर आ रहा है, यह न तो दिल्ली है, न मुंबई, यह अहमदाबाद है। इसकी हाल के सालों में सैलरी ग्रोथ, दूसरे मेट्रो सिटीज के मुकाबले 20 से 25 फीसदी ज्यादा रही है। हालांकि सर्वे से निकला डाटा कोई तथ्य नहीं होता, जिसके आधार पर माना जाए कि यह बात सौ फीसदी सही है। यह भी एक अनुमान ही है, क्योंकि जहां दूसरे कई डाटा बेंगलुरु को सैलरी के लिहाज से देश का टॉप शहर बता रहे हैं, वहीं इनडीड यह तमगा चेन्नई को दे रहा है।

इसलिए बेंगलुरु है सबसे आगे: बेंगलुरु इस समय ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (जीसीसी) हब बन चुका है। भारत के 40 फीसदी से ज्यादा जीसीसी बेंगलुरु में ही हैं। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, गोल्डमैन सैक्स जैसी 250 से ज्यादा बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में अपने मुख्य कार्यकारी दफ्तरों के साथ बेंगलुरु में मौजूद हैं। यही नहीं ये तमाम कंपनियां अपना आरएंडडी (रिसर्च एंड डेवलपमेंट) सेंटर भी यही चलाती हैं। यहीं से नए उत्पादों और नवाचारों को बाजार में उतारती हैं। इसी तरह बेंगलुरु इस समय देश का स्टार्टअप और डीप टेक इकोसिस्टम का भी हब है। 44 फीसदी भारतीय यूनिकॉर्न बेंगलुरु में ही स्थित हैं या यहीं से निकले हैं। एआई, सेमिकंडक्टर और एयरोस्पेस केंद्रित स्टार्टअप बेंगलुरु में ही हैं और इन्हीं की बदौलत यह शहर वेतन प्रतिस्पर्धा में देश के दूसरे महानगरों के मुकाबले बहुत ऊपर है। बेंगलुरु में टैलेंट क्लस्टर बन चुका है, साथ ही यहां एक नई तरह की टैलेंट ओरिएंटेड जीवनशैली विकसित हो रही है। इस शहर में 20 लाख से ज्यादा आईटी पेशेवर कार्यरत हैं तथा ये दुनिया के गिने चुने उन शहरों में से एक बन चुका है, जो विश्व स्तरीय को-वर्किंग स्पेस मुहैय्या कराते हैं।

हैदराबाद भी है मुकाबले में: हैदराबाद और चेन्नई भी बहुत पीछे नहीं है। पिछले कुछ सालों में हैदराबाद ने फिर से तेज छलांग लगाई है और विभिन्न सर्वेक्षणों में भले वह अभी बेंगलुरु से थोड़ा नीचे हो, लेकिन माना जाता है कि अगले दो सालों में यानी 2027 तक हैदराबाद नौकरियां उपलब्ध कराने के मामले में बेंगलुरु को भी पीछे छोड़ सकता है। सिर्फ नौकरियां ही हैदराबाद में ज्यादा नहीं पैदा होंगी बल्कि आने वाले दिनों में अनुमान है कि यहां वेतन वृद्धि भी देश के दूसरे शहरों में सबसे ज्यादा होगी। हैदराबाद में वेतन वृद्धि का सबसे तेज रिकॉर्ड पहले रह चुका है और फिर से यह उसी दिशा में आगे बढ़ता लग रहा है। *

हाल के वर्षों में अंजान लोगों से मिलने, दोस्ती या लव रिलेशन बनाने में डेटिंग एप्स का यंगस्टर्स खूब यूज कर रहे हैं। इनकी पॉपुलैरिटी बढ़ने की वजह, इनके पॉजिटिव-नेगेटिव आस्पेक्ट्स के बारे में जानिए।

डेटिंग एप्स मिलने-मिलाने के नए ठिकाने

{ टेक्नोलाइफ/ लोकमित्र गौतम }

आज के दौर में मॉडर्न डेटिंग एप्स, संबंधों की दुनिया में अहम असर डाल रहे हैं। इस 21वीं सदी के दूसरे दशक में दुनिया में रिश्तों के निर्माण की प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन आया है। प्रेम पत्रों, पारिवारिक मेल-मिलापों और सामाजिक मेलों की जगह अब मोबाइल स्क्रीन और तरह-तरह के एप्स ने ले ली है। टिंडर, बंबल, हिंज, ओके कुपिड जैसे मॉडर्न डेटिंग एप्स ने आज रिश्तों की दुनिया को पूरी तरह बदल दिया है। ये तकनीकी बदलाव सिर्फ अमेरिका या यूरोप तक ही सीमित नहीं हैं, भारत भी पूरी तरह से इनकी चपेट में है, जहां सदियों पुरानी सांस्कृतिक विविधता और जीवन जीने की मजबूत व्यवस्था रही है। लेकिन आज डेटिंग एप्स ने रिश्तों की पारंपरिक दुनिया को पूरी तरह से बदल कर रख दिया है।

जुड़े हैं करोड़ों यंगस्टर्स: आज दुनिया भर में लगभग 37 करोड़ लोग, जिनमें सबसे बड़ी तादाद युवाओं की है, विभिन्न तरह के डेटिंग एप्स से जुड़े हुए हैं। डेटिंग एप्स का किस कदर चलन बढ़ा है, इसका अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि आज अमेरिका में 30 फीसदी वयस्क लोग किसी न किसी डेटिंग एप का हिस्सा हैं। इन एप्स की शुरुआत तो दो अजनबियों के बीच प्रेम संबंध विकसित कराने के लिए एक मध्यस्थ के रूप में हुई थी, लेकिन आज तरह-तरह के डेटिंग एप्स दोस्ती, कैजुअल मीटिंग, विवाह के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं।

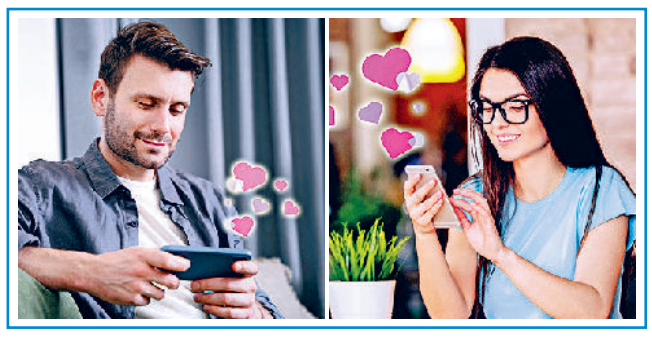

सबसे पॉपुलर डेटिंग एप्स: दुनियाभर में जिस डेटिंग एप की धूम है, उसका नाम टिंडर है। सौ से ज्यादा देशों में सक्रिय इस एप के अप्रैल 2025 तक साढ़े सात करोड़ रजिस्ट्रर्ड उपयोगकर्ता थे। दूसरे नंबर पर बंबल है, जो विशेष तौर पर महिलाओं को ध्यान में रखकर डेवलप किया गया है, क्योंकि इस एप में महिलाओं को रिश्ता आगे बढ़ाने के लिए पहला कदम रखने की आजादी है। यह एप किसी पुरुष को किसी महिला से संबंध जोड़ने के लिए निर्णय लेने की आजादी नहीं देता। इस एप में सिर्फ महिलाएं ही किसी के साथ को स्वीकार कर सकती हैं या उसे अस्वीकार कर सकती हैं। एक तीसरा पॉपुलर एप हिंज है, जो टेकलाइन के साथ गंभीर रिश्ते विकसित करने के लिए डिजाइन किया गया है। इसके अलावा और लाखों सब्सक्राइबर की क्षमता रखने वाले एप्स हैं, उनमें- ओके कुपिड, ग्रिंडर और प्लेंटी ऑफ फिश डेटिंग एप्स हैं। ये सारे रिश्ते बनाने वाले एप्स अलग-अलग उम्र समूह को ध्यान में रख कर डिजाइन किए गए हैं।

इसलिए बढ़ रही पॉपुलैरिटी: डेटिंग एप्स की लोकप्रियता इसलिए बढ़ रही है, क्योंकि इनमें सुरक्षा और गोपनीयता की पुख्ता व्यवस्था होती है। इनमें एक एल्गोरिद्म की गुणवत्ता होती है, चाहे मैचिंग सही हो या न सही हो। लेकिन आमतौर पर एक ही एल्गोरिद्म के लोग इनके जरिए आपस में मिलते हैं। इनकी लोकप्रियता का एक और बड़ा कारण यह है कि इन्हें रीजनल या स्थानीय भाषाओं का सपोर्ट सिस्टम भी हासिल है और सबसे बड़ी बात, इनमें एक खास किस्म का यूजर इंटरफेस होता है, जो इसको वास्तविक माहौल का आभास देता है।

पड़ रहा है रिश्तों पर असर: इन मॉडर्न एप्स का हमारे जीवन और रिश्तों की संवदेनशीलता पर भी असर पड़ा है। निश्चित रूप से इनके चलते अब दो युवा लोगों को आपस में मिलना आसान और सुरक्षित हो गया है। पहले कुछ गिने-चुने सौभाग्यशाली लोग ही होते थे, जिनके जीवन में प्यार, मोहब्बत की जगह होती थी। लेकिन इन डेटिंग एप्स के चलते अब कोई भी अपने अनुकूल दोस्ती के लिए साथी की तलाश कर सकता है।

नेगेटिव पहलू भी हैं मौजूद: हालांकि इन एप्स में सब कुछ अच्छा अच्छा ही नहीं है। इनके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। मसलन एप्स की दोस्ती या प्रेम में कमिटमेंट जैसी कोई चीज नहीं होती। बड़ी तादाद में लोग अपनी झूठी और नकली प्रोफाइल बनाकर एक-दूसरे से संपर्क साधते हैं और इस तरह कई तरह के अपराधों को अंजाम देते हैं। *

{ छोटी कहानी / गोविंद भारद्वाज }

कई वर्ष बाद गोपाल अपने गांव लौटा था। वहां उसकी मुलाकात अपने बचपन के दोस्त रामू से हुई। उसका कटा हाथ देखकर गोपाल को बहुत दुख हुआ। लेकिन रामू को अपने दुख से ज्यादा आत्मग्लानि महसूस हुई।

दिव्यांग

बरसों बाद गांव जाने का मौका मिला। तांगा स्टैंड अब टैंपो स्टैंड में बदल चुका था। टैंपो से उतरते ही अपने नाम की आवाज कानों में पड़ी, 'गोपाल...!' मैंने पलट कर देखा। सामने एक चाय की गुमटी थी, जो धुएं में बिल्कुल काली दिखाई दे रही थी। मैंने टैंपो वाले को बीस का नोट दिया और उस दुकान की तरफ बढ़ गया। 'आ भई...आ.. बहुत दिनों बाद गांव की याद आई तुझे।' उसने मुझे दुकान के अंदर बुलाते हुए कहा। मैंने उससे हाथ मिलाने के लिए अपना दायां हाथ आगे बढ़ाया। उसने हाथ तो अपना बढ़ाया, लेकिन दायां नहीं बायां। मेरी नजर उसके दाएं कंधे की ओर गई। मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई। 'यह क्या हुआ रामू?' मेरे मुंह से निकला। 'भाई गोपाल, मुझे माफ कर दे...।' रामू की आंखें नम हो आईं। 'किस बात की माफी भाई...?' मैंने उसके बाएं हाथ को पकड़ते हुए पूछा। 'दोस्त, तू मुझे जी भर कर लूला (हाथ से दिव्यांग) कह सकता है...।' वह रुआंसा हो गया। मैं समझ गया था, वह क्या कहना चाह रहा है? मैं अतीत में चला गया। बात उन दिनों की है, जब मैं गांव में रहा करता था। मेरी मित्र मंडली में यूं तो बहुत से दोस्त थे। सबके सब मुझे प्यार से गोपाल कह कर बुलाते थे, लेकिन रामू एक ऐसा दोस्त था, जो मुझे लंगड़ा (पैर से दिव्यांग) कह कर बुलाता था। दरअसल, मैं जब छह महीने का था, तब मेरे बाएं कूल्हे पर एक फोड़ा हो गया था, जो बाद में नासूर बन गया था। उसी के चलते मेरा बायां पैर खराब हो गया। मैं हमेशा के लिए दिव्यांगता की श्रेणी में आ गया।

गांव से चार किलोमीटर दूर दूसरे गांव में सीनियर हायर सेकेंडरी स्कूल था। वहां हम सब दोस्त मिलकर नौवीं-दसवीं कक्षा में पढ़ते थे। तब रामू सबके सामने मुझे लंगड़ा कह कर ही पुकारता था। अन्य दोस्त उसको खूब समझाते कि गोपाल को 'लंगड़ा' मत बुलाया कर, लेकिन वह था कि मानता नहीं था। स्कूल के शिक्षक भी उसे इस बात के लिए डांटते, लेकिन वह अपनी आदत से बाज नहीं आता।

एक दिन तो तब हद हो गई, जब उसने प्रिंसिपल साहब के सामने ही मुझे लंगड़ा कह दिया। उन्हें उसकी यह बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने उसे पीटा भी। प्रिंसिपल साहब की पिटाई से तो वह और ज्यादा खफा हो गया। अब वह मुझे जब देखो तब लंगड़ा-लंगड़ा कहकर चिढ़ाने लगा। मेरी भी आदत सी हो गई थी, लंगड़ा सुनने की। मैं कभी नहीं चिढ़ता था। लेकिन दूसरों को उसका लंगड़ा कहकर बुलाना अच्छा नहीं लगता था। दसवीं पास करने के बाद मैं आगे की पढ़ाई के लिए शहर चला आया। एमए अंतिम वर्ष के इम्तिहान खत्म हो चुके थे। इसलिए मैंने सोचा क्यों न गांव जाकर पुराने मित्रों से मिला जाए।

'क्या हुआ कहां खो गया गोपाल ...?' रामू ने मेरे हाथ को झटका देते हुए पूछा। 'कुछ नहीं यार, मैं अपने बचपन में खो गया था। खैर बता तेरे दांए हाथ को क्या हुआ?' मैंने पास में पड़े स्टूल पर बैठते हुए पूछा। 'मत पूछ... जैसी करनी वैसी भरनी...। मैंने तुझे कभी तेरे नाम से नहीं बुलाया... तुझे लंगड़ा ही कहा। अब तू मुझे लूला कह सकता है।' उसने भर्राई आवाज में कहा।

'छोड़ यार पुरानी बातों को...तू मेरे लिए रामू है... और रामू ही रहेगा... पर तुमने बताया नहीं यह सब कैसे हुआ?' मैंने पूछा।

रामू चाय का कप मेरे हाथ में थमाते हुए बोला, 'दसवीं की परीक्षा पास करने के बाद मैं अपने पिताजी के साथ खेती करने लगा। दो साल पहले गेहूं निकालने के लिए खेत में थ्रेसर (अनाज निकालने की मशीन) लगा हुआ था। देर रात तक थ्रेसर पर खड़े रहने की वजह से नींद की झपकी आ गई। मेरा दायां हाथ मशीन में आ गया। जब मुझे होश आया तब मैं अस्पताल में भर्ती था। मेरा दायां हाथ कट चुका था।' 'फिर यह दुकान?' मैंने पूछा।

'दुर्घटना के लगभग एक साल बाद पिताजी ने मेरी छोटी-सी दुकान खुलवा दी। बस यहीं से थोड़ा बहुत कमाकर अपना गुजारा कर लेता हूं... तू बता क्या कर रहा है आजकल?' उसने अपनी बात खत्म करते ही पूछा। मैंने बताया, 'एमए का इम्तिहान दिया है। आगे प्रशासनिक सेवा की तैयारी करने की सोच रहा हूं। मेरा लक्ष्य यही है आईएएस बनूं।' मैं उठ कर चलने लगा तो रामू मेरे गले लग गया, बोला, 'गोपाल, अपने दोस्त को माफ तो कर दिया ना...।' मैंने मुस्कुराते हुए कहा, 'रामू मैं तेरे लिए तो अभी भी लंगड़ा ही हूं... तेरे मुंह से गोपाल अच्छा नहीं लगता।' *

प्रेमचंद की धरोहर कहानियां

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

आगामी 31 जुलाई को कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की 145वीं जयंती मनाई जाएगी। उनके जाने के लगभग नौ दशक गुजर जाने के बाद आज भी उनका कथा साहित्य अगर प्रासंगिक बना हुआ है तो ऐसा उनकी गहन दृष्टि और सामाजिक-राष्ट्रीय सरोकार से प्रतिबद्धता के कारण ही संभव हुआ है। हाल में प्रकाशित होकर आईं ख्यात आलोचक-संपादक पल्लव के संपादन में दो पुस्तकें 'प्रेमचंद की दलित कथाएं' और 'प्रेमचंद की स्वतंत्रता संग्राम कथाएं' इस बात को और प्रमाणित करती हैं। 'प्रेमचंद की दलित कथाएं' पुस्तक में संकलित 15 कहानियां आजादी से पहले के भारतीय समाज में धंसी हुई जातिगत मानसिकता को न केवल उजागर करती हैं, बल्कि उस दौर की सामाजिक कुरूपता को भी कठघरे में खड़ा करती हैं। 'सद्गति, ठाकुर का कुआं, कफन, जुरमाना, मंदिर' और 'दूध का दाम' जैसी कहानियां उस काल के सामाजिक विद्रूप को अनावृत करने के साथ आज भी याद आ जाती हैं, जब इक्कीसवीं सदी के ढाई दशक गुजरने के बाद भी जाति आधारित भेदभाव से उपजी घटनाएं हमारे समाज में घटित होती हैं।

दूसरी पुस्तक 'प्रेमचंद की स्वतंत्रता संग्राम कथाएं' में सोलह ऐसी कहानियां चयनित की गई हैं, जिनमें स्वाधीनता से पहले के भारतीय जनमानस में व्याप्त आजाद होने की आकुलता नजर आती है। इस पुस्तक में संकलित 'सुहाग की साड़ी, जुलूस, बौड़म' और 'शतरंज के खिलाड़ी' आदि कहानियां इस बात को प्रमाणित करती हैं कि पराधीन भारत के आमजन में आजाद होने की कैसी उत्कंठा थी। महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसक आंदोलन के प्रति प्रेमचंद के मन में कितनी निष्ठा थी, इस बात को भी ये कहानियां प्रमाणित करती हैं। ये दोनों पुस्तकें शोधार्थियों के लिए तो उपयोगी होंगी ही, प्रेमचंद के वैचारिक वैशिष्ट्य और सरोकारों को भी समझने में सहायक सिद्ध होंगी। *

पुस्तकें: प्रेमचंद की दलित कथाएं और प्रेमचंद की स्वतंत्रता संग्राम कथाएं,
संपादक: पल्लव, **मूल्य:** 250 रुपए (प्रत्येक), **प्रकाशक:** राजपाल एंड संस, दिल्ली

अमेरिकन रेन डांस

बन बंग फाई, थाइलैंड

वर्षा के लिए प्रार्थना करते तिब्बती बौद्ध भिक्षु

वोडू वर्षा नृत्य, हैती

इन दिनों अपने देश के अधिकांश हिस्सों में मानसून सक्रिय है, खूब बारिश हो रही है। लेकिन कई बार समय पर बारिश नहीं होती है। देश, दुनिया के कई हिस्सों में बारिश न होने पर उसके आह्वान को लेकर कई परंपराएं प्रचलित हैं। यहां बता रहे हैं कुछ ऐसी ही अजब-अनूठी परंपराओं के बारे में।

बहुत अजब-अनोखी हैं दुनिया में बारिश के आह्वान की रस्में

ट्रेडिशंस
शिखर चंद जैन

एक तरफ जहां अतिवृष्टि वाले क्षेत्रों में लोग भगवान से बारिश रोकने की प्रार्थना करते हैं, वहीं बारिश की कमी वाले दुनिया के कई देशों में लोग बारिश के लिए बादलों, देवताओं और ईश्वरीय शक्तियों का आह्वान करते हैं। इसके लिए तरह-तरह की धार्मिक रीतियों का पालन करते हैं।

अमेरिकी जनजातियों का वर्षा नृत्यः अमेरिका के मैदानी हिस्सों में रहने वाली कई जनजातियों के लोग वर्षा नृत्य करते हैं। यह वर्षा के आह्वान का प्राचीन अनुष्ठान है। इस अनुष्ठान में पारंपरिक पोशाक और पंखों वाले मुकुट या टोपी पहन कर, हाथों में चील के पंख लिए, घंटों तक एक घेरे में गाना, ढोल बजाना और नृत्य करना शामिल है। ऐसा माना जाता है कि वर्षा नृत्य से वर्षा के देवता खुश होकर वर्षा करते हैं।

बन बंग फाई (रॉकेट महोत्सव): थाईलैंड के इसान रीजन और उत्तर-पूर्वी थाईलैंड के कुछ इलाकों में हर वर्ष जून महीने में यह अनोखा रॉकेट त्योहार खेती के मौसम से ठीक पहले मनाया जाता है। इस त्योहार के दौरान ग्रामीण लोग और भिक्षु, बांस या लोहे के पाइप से रॉकेट बनाने के लिए एकत्रित होते हैं। इस उत्सव में मंदिर या आस-पास के अन्य इलाकों के चारों ओर एक जुलूस निकाला जाता है, जिसके बाद लोग आकाश में रॉकेट छोड़ते हैं। यह क्रिया 'फाया थाएन' नामक देवता को अर्पित की जाती है, जिनके बारे में माना जाता है कि वे मौसम के अनुसार बारिश का होना सुनिश्चित करते हैं।

आदिवासी बच्चों का मेंढक नृत्यः ऑस्ट्रेलिया देश के आदिवासी, हजारों सालों से मेंढक नृत्य करते आ रहे हैं। यह नृत्य शुष्क मौसम में किया जाता है, जब मेंढक शांत होते हैं। यह मेंढकों को जगाने और बारिश के आह्वान के लिए किया जाता है। इस नृत्य में मेंढकों की गतिविधियों की नकल करना, मेंढक जैसी आवाजें निकालना, शरीर पर रंग, जानवरों की खाल पहनना, भाले और बूमरैंग लेकर चलना शामिल होता है।

नांग मेव समारोहः थाईलैंड में ही बन बंग फाई के अलावा, थाई किसानों द्वारा देश के मध्य और पूर्वोत्तर क्षेत्रों में वर्षा के आह्वान के लिए नांग मेव समारोह भी मनाया जाता है। जब बुवाई का मौसम आता है, तो किसान अपने गांवों या मंदिरों में नांग मेव (बिल्ली) की परेड निकालते हैं, इस उम्मीद में कि जब बारिश की सबसे ज्यादा जरूरत हो, तब बारिश हो। ऐसा माना जाता है कि बिल्लियां बारिश से डरती हैं और अगर इस समारोह के दौरान कोई बिल्ली रोती है, तो इसका मतलब माना जाता है कि बारिश होने वाली है।

नांग मेव समारोह, थाईलैंड

केबो-केबोआनः इंडोनेशिया में केबो-केबोआन पारंपरिक समारोह मनाया जाता है। यह पूर्वी जावा के अलियान और अलस्मलांग गांवों में बान्यूवांगी लोगों द्वारा सदियों से मनाया जाता रहा है। यह समारोह बारिश, अच्छी फसल और शुष्क मौसम में आपदाओं से सुरक्षा की प्रार्थना के लिए किया जाता है। ग्रामीणों का मानना है कि इस परंपरा का पालन ईश्वर की कृपा के प्रति उनकी कृतज्ञता का प्रतीक है और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए पूर्वजों की आत्माओं का आह्वान करता है। भैंसों को इस पारंपरिक समारोह का मुख्य प्रतीक माना जाता है क्योंकि वे किसानों की गतिविधियों और चावल के खेती से गहराई से जुड़े होते हैं। समारोह के दौरान, लोग भैंसों (केबो) की वेशभूषा धारण करते हैं और उनकी भूमिका निभाते हैं, क्योंकि इसमें कोई वास्तविक जानवर शामिल नहीं होता। समारोह की शुरुआत प्रार्थना और टुम्पेंग नामक व्यंजन खाने से होती है। टुम्पेंग, जीवन चक्र के प्रतीक माने जाने वाले, चावल के 12 शंकु के आकार के ढेरों से बना एक व्यंजन होता है।

भिक्षुओं द्वारा मंत्रोच्चारः जब भी सूखा पड़ता है या समय पर बारिश नहीं होती है तो तिब्बती भिक्षु, आकाश और जल के देवी-देवताओं से प्राचीन मंत्रों और प्रार्थनाओं का जाप शुरू कर देते हैं। भिक्षुओं का मानना है कि उनके जाप से वातावरण शुद्ध होता है और वर्षा के लिए आवश्यक परिस्थितियां बनती हैं। यह जाप अकसर पर्वत शिखरों पर किया जाता है।

वोडू वर्षा नृत्यः हैती के लोगों में बारिश बुलाने का अनुष्ठान वोडू वर्षा नृत्य कहलाता है। यह सूखे के दौरान किया जाने वाला एक अनोखा नृत्य है। इसके जरिए कलाकार वोडू धर्म की पवित्र आत्माओं (लोआ) को बारिश के लिए आमंत्रित करते हैं। *

भारत में वर्षा संबंधी विभिन्न समारोह

वरुण यज्ञ अनुष्ठानः वरुण यज्ञ अनुष्ठान, वैदिक हिंदू वर्षा आह्वान अनुष्ठान है। यह आज भी भारत के कई हिस्सों में किया जाता है। यह अनुष्ठान सनातन धर्म में जल के देवता वरुण को समर्पित है। इसमें मंत्रोच्चार, अग्नि में आहुति देना और वर्षा हेतु प्रार्थनाएं शामिल होती हैं। यह अनुष्ठान आमतौर पर मानसून के मौसम में उन क्षेत्रों में किया जाता है, जहां बरसात की कमी होती है।

अभिषेकम अनुष्ठानः दक्षिण भारत के किसान विशेष रूप से यह वर्षा-आह्वान अनुष्ठान अपनी उपज बढ़ाने के लिए, वर्षा की प्रार्थना हेतु करते हैं। यह अनुष्ठान हिंदू धर्म में वर्षा के देवता, भगवान इंद्र को समर्पित है। इसमें उनकी मूर्ति पर जल और दूध चढ़ाया जाता है। इसका उद्देश्य वर्षा के देवताओं को प्रसन्न करना और वर्षा लाना है। यह आमतौर पर गर्मी के महीनों में किया जाता है, जब वर्षा कम होती है।

मेंढकों का विवाहः देश के कई हिस्सों, विशेष रूप से उत्तर, मध्य-पश्चिमी राज्यों राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़ आदि के ग्रामीण और कई आदिवासी इलाकों में मान्यता है कि बारिश न होने पर अगर सामूहिक तौर पर मेंढक-मेंढकी का विवाह करवा दिया जाए तो बारिश होती है।

बढ़ती महंगाई के दौर में किसी एक नौकरी पर पूरी तरह निर्भर रहने के बजाय अगर आप पोर्टफोलियो करियर चॉइस अपनाते हैं, तो इससे आपके करियर ग्रोथ और इनकम के कई रास्ते खुल सकते हैं। पोर्टफोलियो करियर, इसके ऑप्शंस और बेनिफिट्स के बारे में जानिए।

आज के दौर की जरूरत है पोर्टफोलियो करियर

प्रोफेशनल लाइफ / अंजू जैन

एक जमाना था जब लोग बड़े गर्व से बताते थे कि उन्होंने किसी एक ही बिजनेस फर्म या बड़ी कंपनी में नौकरी शुरू की और 35-40 साल तक काम करके वहीं से रिटायर हो गए। वो दौर पिछली सदी का था। तब किसी कंपनी में आप समर्पण, मेहनत और ईमानदारी से काम करते थे तो आपको नौकरी खोने का इतना डर नहीं होता था। लेकिन अब बहुत कुछ बदल चुका है। कंपनियां जब ले ऑफ करती हैं तो कोई भी उसकी चपेट में आ सकता है। एंप्लॉई भी जहां ज्यादा सैलरी या अच्छा पैकेज देखता है, वहीं चला जाता है। दिनों-दिन बढ़ती कॉस्ट ऑफ लिविंग, शिक्षा और चिकित्सा पर बढ़ा हुआ खर्च आदि को देखते हुए एक जॉब पर पूरी तरह निर्भर रहना ना तो सुरक्षित है, ना बुद्धिमानी। आय के एक से ज्यादा स्रोत रखना और अपनी मल्टीपल प्रोफेशनल आइडेंटिटी रखना आज के वक्त की जरूरत है। इसलिए आपको भी पोर्टफोलियो करियर माइंडसेट के बारे में सोचना चाहिए।

पोर्टफोलियो करियर क्या हैः पोर्टफोलियो करियर यानी एक व्यक्ति द्वारा अपनी स्किल्स का प्रयोग करते हुए आय के कई स्रोतों की व्यवस्था करना। इसके अंतर्गत एक फुल टाइम जॉब के साथ-साथ या फिर बिना फुल टाइम जॉब के अलग-अलग कई काम किए जाते हैं। पोर्टफोलियो करियर में साइड हसल, एकाधिक पार्ट टाइम जॉब्स, साइड बिजनेस या फ्रीलांसिंग शामिल हैं।

उदाहरण के लिए एक नौकरीशुदा ग्राफिक डिजाइनर एक से अधिक व्यवसाइयों के लिए लोगो बना सकता है। एक अकाउंटेंट पूर्णकालिक रूप से एक फर्म में काम कर सकता है, साथ ही अपनी प्राइवेट प्रैक्टिस भी कर सकता है।

पोर्टफोलियो करियर के फायदेः पोर्टफोलियो करियर के कई फायदे होते हैं।

बैलेंस्ड पर्सनल-प्रोफेशनल लाइफः पोर्टफोलियो करियर अपनाने वाले लोग अपनी सुविधानुसार टाइम टेबल और अपनी पसंद का काम चुन सकते हैं। इसमें अकसर घर से काम करने की छूट होती है, जिससे विभिन्न गतिविधियों, पारिवारिक जिम्मेदारियों या अन्य कामों के लिए आपको समय मिल जाता है। इससे आपको बेहतर वर्क-लाइफ बैलेंस प्राप्त करने में मदद मिलती है।

एक्सट्रा इनकमः पोर्टफोलियो करियर के साथ आप कई सोर्सेज से इनकम प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे में अगर आपको अचानक नौकरी से निकाल दिया जाता है, तब भी आपका सोर्स ऑफ इनकम बंद नहीं होगा।

नो बाउंडेशनः पोर्टफोलियो करियर के साथ आपको किसी खास तरह की नौकरी के बंधन में नहीं रहना पड़ता। आप अपनी रुचियों को समय देने और उन्हें पोषित करने वाले किसी करियर को परख और चुन सकते हैं। पोर्टफोलियो करियर आपको किसी भी चीज के लिए प्रतिबद्ध हुए बिना विभिन्न अनुभव प्राप्त करने का अवसर देता है।

पोर्टफोलियो करियर शुरू करें ऐसेः अपना पोर्टफोलियो करियर आप कुछ इस तरह शुरू कर सकते हैं।

प्रॉपर प्लानिंग बनाएंः अगर आप अपना पोर्टफोलियो करियर शुरू करने का फैसला करते हैं तो इसकी प्रॉपर प्लानिंग बनाएं और उस पर अमल करें। आप रेग्युलर करियर के साथ-साथ पोर्टफोलियो करियर भी अपना सकते हैं या फिर सिर्फ पोर्टफोलियो करियर भी अपना सकते हैं।

अपनी स्किल्स को समझेंः इसके लिए अपनी क्रिएटिविटी, स्किल्स और इंट्रेस्ट पर विचार करें ताकि आप यह निर्धारित कर सकें कि आप किस तरह के काम से इनकम के लिए इनका उपयोग करना चाहते हैं। इसके बाद ही उस दिशा में अपने कदम बढ़ाएं। इससे सफल होने के चांसेज काफी बढ़ जाएंगे।

लोगों के साथ नेटवर्क बनाएंः अपने पोर्टफोलियो करियर को विकसित करने के लिए आप अपने पुराने सहकर्मियों, सहपाठियों, दोस्तों और ग्राहकों के साथ फिर से जुड़ें। उन्हें अपने काम के बारे में बताएं। संभव है कि वे आपके लिए उपयुक्त अवसरों के बारे में बता सकें। वे आपको सलाह, संपर्क, सहायता या यहां तक कि काम भी दे सकते हैं। *

भारत की प्राचीनतम नदियों में से एक गंगा को भारतीय संस्कृति में पूज्य एवं जीवनदायिनी माना जाता है। इसका केवल धार्मिक ही नहीं, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व भी बहुत अधिक है। भारतभूमि की जीवनधारा गंगा के प्रवाह और महत्ता पर एक दृष्टि।

सभ्यता-संस्कृति की वाहक पुण्यसलिला-जीवनदायिनी गंगा

नदी गाथा
वीना गौतम

नदियों के किनारे ही संसार की सभी सभ्यताएं, संस्कृतियां विकसित हुई हैं, फली-फूली हैं। धरती पर नदियों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जलवायु परिवर्तन, बढ़ती आबादी और नदियों के प्रति लोगों की उदासीनता के कारण धरती पर जल संकट तो गहराया ही है, अब तो नदियों के अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। नदियों का न केवल संरक्षण जरूरी है बल्कि हमें अपनी नई पीढ़ी को इनके प्रति संवेदनशील भी बनाना जरूरी है ताकि इनका अस्तित्व बचा रहे और धरती में इंसानी सभ्यता और संस्कृति भी हमेशा की तरह फूलती-फलती रहे।

भारतीय सभ्यता-संस्कृति की पहचानः गंगा भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदी ही नहीं है। यह भारतीयता की पहचान और देश की जीवनरेखा भी मानी जाती है। भारतीय जनमानस में इस नदी के प्रति असीम श्रद्धा है। यह न केवल हमें जल प्रदान करती है बल्कि आस्था, सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीय गौरव की भी वाहक है। देश की सबसे महत्वपूर्ण और पूज्यनीय नदी गंगा को भारत की भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवनरेखा माना जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि गंगा में सिर्फ पानी नहीं, एक समूची सभ्यता प्रवाहमान है।

गंगा नदी का प्रवाह तंत्रः गंगा नदी की उत्पत्ति हिमालय के गोमुख हिम नदी से होती है, जहां इसे भागीरथी कहा जाता है। प्रवाह के क्रम में अलकनंदा, जब इस भागीरथी में आ मिलती है, तो उसके बाद से इन दोनों नदियों का संगम गंगा कहलाने लगता है। गंगा भारत की सबसे लंबी नदी है। इसकी लंबाई 2525 किलोमीटर है। गंगा के बेसिन में भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 26 प्रतिशत से ज्यादा भाग आता है। गंगा जिन अपनी सहायक नदियों के चलते देश की सबसे महान नदी बनती है, उन सहायक नदियों में यमुना, घाघरा, गंडक, कोसी और सोन नदी प्रमुख हैं। गंगा उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल से होकर बहती है तथा अंत में बांग्लादेश में प्रवेश कर पद्मा के रूप में बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है।

बसे हैं कई तीर्थस्थलः गंगा नदी देश के अनेक महत्वपूर्ण शहरों से होकर बहती है। साथ ही यह देश के कई पवित्र तीर्थस्थलों की पुण्य सलिला भी है। गंगा नदी के किनारे ही हरिद्वार, ऋषिकेश, वाराणसी, प्रयागराज और गंगा सागर जैसे पवित्र तीर्थस्थल हैं, जो धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय सभ्यता के आधार हैं।

एक जीवंत भौगोलिक संसाधनः भौगोलिक दृष्टि से गंगा बहुत ही महत्वपूर्ण नदी है। गंगा घाटी का क्षेत्र भारत की सबसे उपजाऊ कृषि भूमि के अंतर्गत आता है। इस क्षेत्र में गंगा के जल से सिंचाई, जल परिवहन और पेय जल की लगभग समूची व्यवस्था बनती है, जो इसे एक जीवंत भौगोलिक संसाधन के रूप में बदलती है। गंगा घाटी क्षेत्र में बसने वालों के लिए गंगा सिर्फ एक नदी नहीं बल्कि जीवनधारा है।

धार्मिक-सांस्कृतिक महत्वः हिंदू धर्म में गंगा को केवल नदी या जलधारा नहीं माना जाता, बल्कि इसे माता, देवी और मोक्षदायिनी का दर्जा प्राप्त है। गंगा के जल को अमृत के तुल्य माना जाता है। इसलिए भारत के हर धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान में गंगा जल का इस्तेमाल होता है। यही नहीं, मोक्ष की कामना रखने वाले हर धार्मिक हिंदू की यह ख्वाहिश होती है कि उसकी मृत्यु के पश्चात उसके मुंह में गंगा जल की कुछ बूंदें डाली जाएं और उसकी चिता की राख को गंगा नदी में प्रवाहित किया जाए। आरंभ से लेकर आज तक गंगा भारतीय मानस में आस्था एवं श्रद्धा के रूप में प्रवाहित हो रही है। गंगा का उल्लेख वैदिक ग्रंथों से लेकर भारतीय साहित्य, कला, संगीत और लोककथाओं में व्यापक रूप से मिलता है। गंगा का उल्लेख हमारे राष्ट्रगान में भी मिलता है।

गंगा का आर्थिक महत्वः भारत का लगभग 40 फीसदी हिस्सा गंगा के बेसिन क्षेत्र में बसता है और यह क्षेत्र देश के कृषि, उद्योग और व्यापार की दृष्टि से सबसे समृद्ध है। गंगा का जल उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल तथा झारखंड के एक बड़े हिस्से में सिंचाई का सबसे बड़ा स्रोत है। गंगा, यमुना के दोआब की भूमि गेहूं, गन्ना और दलहन की खेती के लिए मशहूर है। हरित क्रांति की सबसे बड़ी प्रयोग भूमि यही गंगा का मैदान था।

गंगा के किनारे कोलकाता, कानपुर, भागलपुर, वाराणसी और पटना जैसे देश के कई औद्योगिक नगर बसे हैं। चमड़ा, वस्त्र, खाद्य प्रसंस्करण, बिजली संयंत्र, कागज उद्योग जैसे कई औद्योगिक संयंत्र स्थापित हैं। हाल के दशकों में राष्ट्रीय जलमार्ग-1 परियोजना के तहत हल्दिया से वाराणसी तक जल परिवहन को प्रोत्साहित किया गया है, जिससे गंगा सस्ते और एक पर्यावरण अनुकूल जल परिवहन का भी आधार बन गई है।

चुनौतियां हैं कईः गंगा के समक्ष आज अनेक चुनौतियां भी हैं, जिन्हें दूर किया जाना आवश्यक है। दरअसल, गंगा के जल पर दुनिया में सबसे ज्यादा जनसांख्यिकी दबाव है। जितने लोग गंगा नदी पर आश्रित हैं, उतने लोग दुनिया में किसी और नदी पर अपने जीवनयापन और सभी तरह की पहचान के लिए आश्रित नहीं हैं। इसलिए गंगा पर अतिरिक्त जन दबाव, औद्योगिक प्रदूषण, अपशिष्ट जल के साथ-साथ धार्मिक कर्मकांडों एवं प्रदूषण की भी मार है। गंगा नदी के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। नमामि गंगे मिशन जैसी योजना चलाई जा रही है। अनेक जलशुद्धि सयंत्रों की स्थापना की गई है। *

हिंदी फिल्में नायक, नायिका और खलनायकों के बॉलीवुड में अपने पैर जमाने में मदद करती रही हैं, एक बड़ी पहचान दी है। इसके साथ इनके पैरों का फिल्मों में बहुत ही करिश्माई अंदाज में फिल्मांकन हुआ, जिसने सस्पेंस, रोमांच, एक्शन, रोमांस क्रिएट करके फिल्म की कहानी को आगे बढ़ाने में इंपॉर्टेंट रोल अदा किया है। ऐसी ही कुछ फिल्मों पर एक नजर।

पर्दे पर पैरों का करिश्मा

सिने ट्रेंड
हेमंत पाल

हिंदी सिनेमा की शुरुआत से लेकर आज तक कई सितारों ने अपनी काबिलियत के दम पर फिल्म इंडस्ट्री में अपने पैर जमाए। कई बार तो नायक-नायिकाओं के पैरों के फिल्मांकन ने फिल्म इंडस्ट्री में उनके पैर जमाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

फिल्म में हीरो से पहले उसके पैरों की एंट्रीः फिल्म 'फूल और पत्थर' में नायक धर्मेंद्र की एंट्री छोटे-छोटे पैरों से सड़क पर चढ़ते हुए और बड़े पैरों से सड़क से उतरते हुए थी, जिसे बहुत पसंद किया गया। इसके बाद तो कई फिल्मों में पैरों का शॉट दिखाकर नायक को बच्चे से बड़ा दिखाने के प्रयोग किए गए।

पैरों ने क्रिएट किया सस्पेंस-एक्शनः देव आनंद की 'ज्वेल थीफ' में भी पांव को लेकर सस्पेंस दिखाया गया। नायिका कहती है कि नायक के पैरों में छह अंगुलियां हैं, वह पैर दिखाए। लेकिन वह टालमटोल करता है, जिससे सस्पेंस बढ़ता जाता है। बाद में नायक जिस अंदाज से मौजे उतारता है, वह दृश्य देखने लायक होता है। फिल्म 'शोले' में हाथ कटे ठाकुर (संजीव कुमार) की असमर्थता तब शौर्य में बदल जाती है, जब फिल्म के क्लाइमेक्स में वह अपने पैरों में पहने कील लगे जूतों से गब्बर सिंह (अमजद खान) को मारता है। ठाकुर के पैर की हर ठोकर पर सिनेमा हॉल तालियों और सीटियों से गूंज उठता। 'शोले' में ही गब्बर सिंह को भी चट्टान पर बेल्ट लेकर घूमते दिखाया गया, तब कैमरा उसके पैरों पर ही फोकस होता है।

शम्मी कपूर की फिल्म 'चायना टाउन' में नायक के हमशक्ल के पैरों का आकार छोटा होने से कहानी में मोड़ आता है, तो सलीम जावेद ने 'यादों की बारात' में एक नया प्रयोग किया। इसमें खलनायक अजीत के दोनों पैरों के आकार में अंतर होता है। वह एक पैर में 9 नंबर और दूसरे पैर में 10 नंबर का जूता पहनता है। फिल्म के क्लाइमेक्स में जब टेबल पर अजीत के दोनों जूते दिखाए जाते हैं, तो फिल्म के नायक धर्मेंद्र उसे पहचान लेते हैं। इसके साथ ही फिल्म का रोमांच चरम सीमा पर पहुंच जाता है।

नायिकाओं के हसीन पैरः हिंदी फिल्मों में नायिका के हसीन पैरों पर भी कई आइकॉनिक दृश्य और गीत फिल्माए गए। फिल्म 'पाकीजा' में मीना कुमारी के पैरों की खूबसूरती ने खूब करिश्मा किया। बिना चेहरा देखे, रेल की सीट पर मीना कुमारी के पैर देखकर राजकुमार एक चिट्ठी छोड़ जाते हैं, जिस पर लिखा होता है 'आपके पांव देखे, बहुत हसीन हैं, इन्हें जमीन पर मत उतारिएगा, मैले हो जाएंगे।'

याद कीजिए फिल्म 'शोले' का वो डायलॉग जिसमें गब्बर सिंह बसंती से कहता है 'जब तक तेरे पैर चलेंगे, उसकी सांस चलेगी। जब तेरे पैर रुके, तो ये बंदूक चलेगी।'

फिल्म 'मिस मेरी' में बचपन में बिछड़ी नायिका के पैरों की छह अंगुलियां, उसे अपने परिवार से मिलाती है तो 'नाचे मयूरी' में सुधा चंद्रन के नकली पैरों से नर्तकी बनने की कहानी कही गई।

जब नायिकाओं के पैरों की बात आती है, तो जाहिर है वह सुंदर तो होंगे ही। 'मेरे पांव में मेहंदी लगी है', 'आजकल पांव जमीं पर नहीं पड़ते मेरे', 'पांव छू लेने दो फूलों को इनायत होगी', जैसे कितने ही मधुर और सदाबहार गीत नायिका के पैर को ध्यान में रखकर रचे गए।

पैरों से उभारी गई संवेदनाः कई फिल्मों में नायक के पैरों को कुछ इस तरह प्रस्तुत किया गया, जिससे रोमांच के साथ-साथ संवेदना भी जगती है। मिसाल के तौर पर राजश्री प्रोडक्शन की फिल्म 'दोस्ती' को देखा जा सकता है। एक पैर से दिव्यांग और आंख की रोशनी खो चुके व्यक्ति की दोस्ती पर आधारित इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर लंबी दौड़ लगाते हुए उस समय की कई फिल्मों को पीछे छोड़ दिया था। फिल्मों में गरीबी और मजबूरी दिखाने के लिए भी निर्माताओं ने कभी नायक को, कभी नायिका को तो कभी सहनायिका या सहनायक को पैरों से दिव्यांग बनाने का फार्मूला आजमाया। 'उपकार' का मलंग, 'हीर रांझा' का एक पैर से अशक्त मामा, 'सच्चा झूठा' और 'मजबूर' की पैरों से दिव्यांग बहन ने दर्शकों को भावुक कर दिया। इसी तरह फिल्म 'शान' में चलने में अक्षम अब्दुल (मजहर खान) का मुखबिर का किरदार भी काफी लोकप्रिय हुआ था। *

'शोले' में अमजद खान के साथ संजीव कुमार

'उपकार' में मलंग के किरदार में प्राण

राजकुमार के पैर और सफेद जूते

याद कीजिए फिल्मों के वे सीन, जिनमें पर्दे पर हीरो से पहले उसके सफेद जूते दिखाए जाते थे और दर्शक जान जाते थे कि अब सीन में किसकी एंट्री होने वाली है। 'हमराज' और 'वक्त' में राजकुमार की जानदार एंट्री तो आपको याद ही होगी। इन फिल्मों में जैसे ही परदे पर राजकुमार के सफेद जूते दिखाई देते, दर्शक तालियों से उनका स्वागत करते। राजकुमार खुद इस तथ्य से वाकिफ थे, वे अकसर बी.आर. चोपड़ा से मजाक में कहा करते थे, 'जानी, सुना है आजकल आप हमारे जूतों की कमाई खा रहे हैं।'